ग्लोबल यूथ कल्चर

एक डिजिटल पीढ़ी से अन्तर्दृष्टि

विषय – सूची

3 परिचय

5 धार्मिक प्रवृति और व्यवहार
16 व्यक्तिगत अनुभव और संघर्ष
25 डिजिटल जुड़ाव और प्रभाव
33 पहचान और सम्बन्ध
44 प्रभाव और मार्गदर्शक आवाज

53 रॉब हॉकिन्स का पत्र
54 वनहोप के बारे में
54 कार्यविधि
55 आँकड़ों को इकट्ठा करना
56 परिभाषाएँ
57 सर्वेक्षण उपकरण

परिचय

किशोरों और युवा वयस्कों की दुनिया की वर्तमान पीढ़ी का जन्म 1995-2012 के बीच हुआ था। इस पीढ़ी में इनकी संख्या लगभग 2 अरब है, जिसमें दुनिया की लगभग 25% आबादी[1] शामिल है। ये युवा पीढ़ी अपने जीवन के अनुभवों और जिस दुनिया में बड़े हो रहे हैं, उसके परिणाम स्वरुप एक अनोखा और अलग दृष्टिकोण रखते हैं।

इस शोध से इस वैश्विक पीढ़ी की आदतों, संघर्षों, विश्वासों और प्रभावों का पता चलता है। इन आँकड़ों से परमेश्वर, यीशु, बाइबल और मसीही कलीसिया के बारे में उनके विचारों का भी पता चलता है। हमारा मानना है कि यह वैश्विक स्तर पर इस पीढ़ी के विश्वास पर गहराई से विचार करने के मामले में अपनी तरह का सबसे बड़ा अध्ययन है। दुनिया भर में हमारे द्वारा हजारों किशोरों से इकट्ठे किए गए सैकड़ों आँकड़े बिन्दु इस पीढ़ी की एक तस्वीर बनाते हैं जिसमें कुछ आश्चर्यजनक खोज और अनकही कहानियाँ शामिल हैं।

20 देश | **14 भाषाएँ** | **8,394 डिजिटल रूप से जुड़े किशोर** | **आयु 13-19** | **70 सामग्री सर्वेक्षण**

अफ्रीका: केन्या, नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका (1,275 किशोरों का सर्वेक्षण किया गया)

एशिया: चीन, भारत, इंडोनेशिया, जापान, वियतनाम (2,100 किशोरों का सर्वेक्षण किया गया)

यूरेशिया: मिस्र, नीदरलैंड, पुर्तगाल, रोमानिया, रूस, स्पेन, यूनाइटेड किंगडम (2,936 किशोरों का सर्वेक्षण किया गया)

लैटिन अमेरिका: अर्जेन्टिना, ब्राजील, कोलम्बिया, मेक्सिको (1,673 किशोरों का सर्वेक्षण किया गया)

उत्तरी अमेरिका: संयुक्त राज्य अमेरिका (410 किशोरों का सर्वेक्षण किया गया)

1 संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या विभाग https://esa.un.org/unpd/wpp/DataQuery/

किशोरों के बारे में

बालक *51%*

बालिकाएँ *49%*

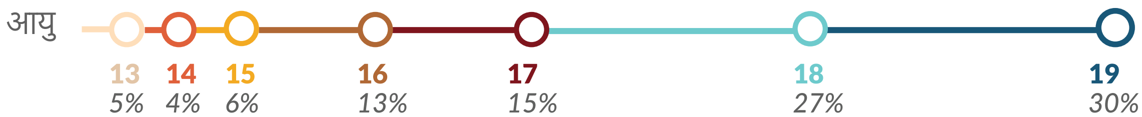

अन्य धर्म **23%**

- *मुस्लिम 12%*
- *बौद्ध 5%*
- *हिन्द 4%*

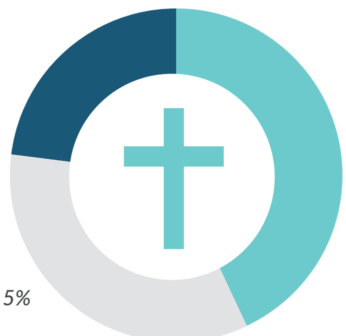

मसीही **43%**

कोई धर्म नहीं **34%**

- *नास्तिक 15%*
- *कोई नहीं 13%*
- *अनीश्वरवादी 5%*

इस सर्वेक्षण को ऑनलाइन मंच के माध्यम से 13-19 वर्ष की आयु के उन युवाओं के लिये वितरित किया गया था जो नियमित रूप से इन्टरनेट का इस्तेमाल करते हैं। ध्यान दें कि इन परिणामों का तात्पर्य सभी किशोरों के दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करने के लिये नहीं है बल्कि केवल उनका जो डिजिटल रूप से जुड़े हुए हैं। यह आँकड़ा 24 फरवरी से 27 मार्च, 2020 के बीच–कोरोनोवायरस वैश्विक महामारी के प्रभावों को व्यापक रूप से महसूस किए जाने से पहले एकत्रित किया गया था। इसके परिणामस्वरूप, यह शोध अपने स्थानों में ही सीमित होने और एकान्तता के आदेशों को दिए जाने से पूर्व किशोरों के विश्वासों और व्यवहारों को दर्शाता है ।

शोधकर्ता समूह की ओर से

हम आशा करते हैं कि आप इस रिपोर्ट से न केवल कुछ नया सीखेंगे, बल्कि हर पीढ़ी की तरह—इस पीढ़ी—जिन्हें उनके जीवन में सुसमाचार की आशा की आवश्यकता है के प्रति आपके मन और हृदय में कार्य करने की प्रेरणा उत्पन्न होगी। इस अध्ययन में प्रत्येक आँकड़ा कई किशोरों के उनकी अपनी आशाएँ, भय और संघर्षों का प्रतिनिधित्व करता है। उनमें से हर किशोर का अपना एक नाम, एक कहानी और एक अनन्त उद्देश्य की प्राप्ति है। वनहोप हर युवा को यीशु के साथ उसके वचन के द्वारा जोड़ते हुए उनके उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु प्रभाव उत्पन्न करने के लिये समर्पित किया गया है।

धार्मिक प्रवृति और व्यवहार

हमें क्या पता चला

विश्व स्तर पर किशोर . . .

विश्व स्तर पर **आधे से अधिक** (52%) किशोर कहते हैं कि वे **कभी भी धार्मिक पुस्तकें स्वत: नहीं पढ़ते हैं।**

किशोर जो कलीसिया में नहीं जाते हैं, वे बड़े स्तर पर बताते हैं कि अगर **उन्हें आमन्त्रित किया जाए तो वे जाने को तैयार हैं** और कहते हैं कि जिन मसीहियों को वे जानते हैं **वे दयालु और देखभाल करने वाले हैं।**

आधे से अधिक (52%) किशोर मानते हैं **कि सभी धर्म समान रूप से मान्य सत्य को सिखाते हैं।** गैर-विश्वासियों **की तरह ही** मसीही लोग भी ऐसा कहते हैं।

जब धार्मिक **सेवकाई में शामिल होने, धर्मशास्त्र का पठन और प्रार्थना** की बात आती है तो हमारे अध्ययन में मुस्लिम युवा किसी भी अन्य धर्म के मुकाबले **अधिक अनुशासित** पाए जाते हैं।

विश्व स्तर पर **तीन में से दो** किशोर कहते हैं कि उनकी आस्था-विश्वास या आत्मिक यात्रा **उनकी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।**

मसीही किशोर . . .

सर्वेक्षण किए गए **43%** किशोरों ने **मसीही के रूप में अपनी पहचान** बताई।

केवल **7%** ही एक **समर्पित मसीही** के विश्वासों और आदतों को प्रदर्शित करते हैं। *(पृष्ठ 8 पर परिभाषा देखें)।*

मसीही के रूप में अपनी पहचान बताने वाले **40%** किशोर कहते हैं कि उन्होंने **कभी बाइबल नहीं पढ़ा।**

मसीही धर्म के मूल विश्वासों को मानने वाले, नियमित रूप से बाइबल पढ़ने वाले, और प्रार्थना करने की आदत वाले किशोरों में **व्यक्तिगत संघर्षों की दर काफी कम दर्ज की गई है।**

धार्मिक मनोभाव और व्यवहार

आज के किशोरों के जीवन में विश्वास और धर्म की भूमिका की जाँच करने के लिये यह शोध अध्ययन विशिष्ट रूप से व्यापक था।

वे क्या कहते हैं कि आत्मिक यात्रा उनके लिये कितना महत्वपूर्ण है? वे अपने विश्वासों को व्यवहार में कैसे ला रहे हैं? यह अध्ययन आज के किशोरों के धार्मिक प्रवृति और व्यवहार और उनके जीवन के अन्य क्षेत्रों पर उनके प्रभाव की जाँच करता है।

वैश्विक धार्मिक पहचान

वैश्विक रूप से, लगभग 5 में से 2 किशोरों ने खुद को मसीही के रूप में पहचाना, 4 में से 1 ने दूसरे धर्म के रूप में, और 3 में से 1 ने बिना किसी धर्म, नास्तिक या अनीश्वरवादी के रूप में पहचाना। हमारे द्वारा अध्ययन किए गए सभी क्षेत्रों में, अफ्रीका सबसे अधिक और एशिया सबसे कम मसीही क्षेत्र था।

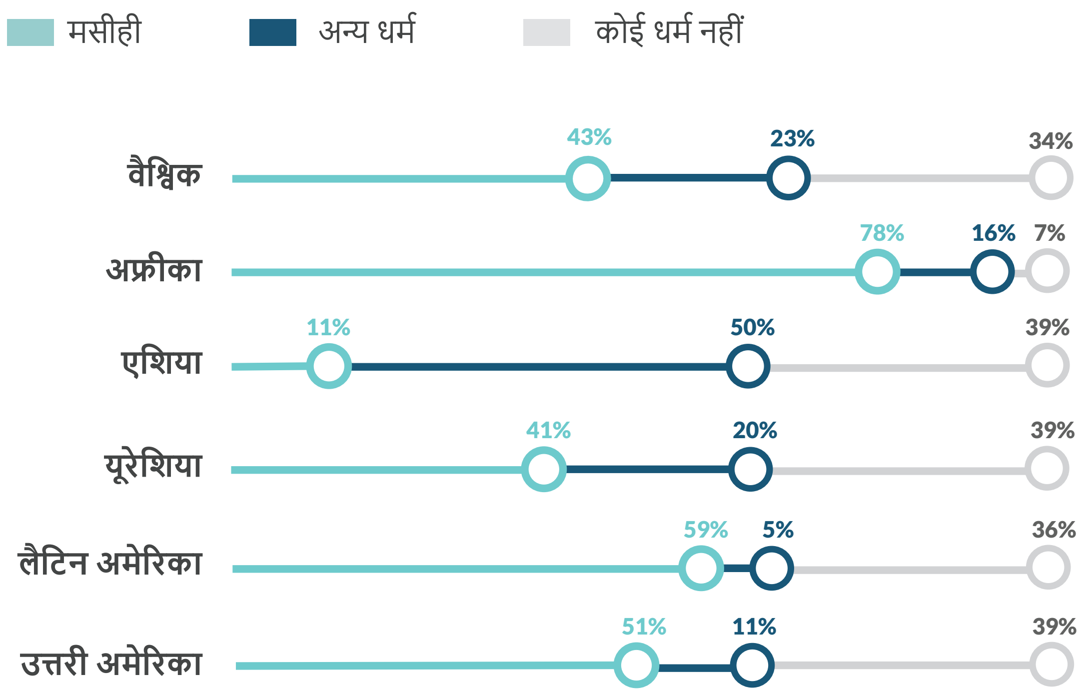

केवल कुछ ही समर्पित

विश्वास से सम्बन्धित कुछ सबसे रुचिकर निष्कर्ष तब सामने आए जब हमने अपना ध्यान मसीही किशोरों पर केन्द्रित किया, जो पारम्परिक मसीही मान्यताओं और रीति-रिवाजों के प्रति समर्पित हैं। हमने सीखा कि अपने आप को मसीही कहने का क्या अर्थ है; यह व्यक्ति, उनके माहौल और उनके सांस्कृतिक संदर्भ के अलग-अलग होने पर अधिक निर्भर करता है। इस शोध के उद्देश्यों के लिये, वनहोप ने विश्वासों और व्यवहारों की एक परिभाषा तैयार की है जो बताता है कि प्रतिक्रिया करने वाला एक समर्पित मसीही है कि नहीं।

समर्पित मसीही किशोरों के 6 लक्षण

- विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है और वे उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध रख सकते हैं
- हफ्ते में एकबार अवश्य प्रार्थना करते हैं
- हफ्ते में एकबार अपने आप से पवित्र शास्त्र अवश्य पढ़ते हैं

- विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है
- विश्वास करते हैं कि पापों की क्षमा यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा ही सम्भव है
- विश्वास करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है

**ध्यान दें कि ये किशोर अपने आप को मसीही के रूप में पहचानते हैं, "यहोवा साक्षी" या "मोर्मोन" के रूप में नहीं। समर्पित मसीही में कैथोलिक, सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट, ऑर्थोडॉक्स या कई अन्य सम्प्रदाय हो सकते हैं।*

विश्व स्तर पर, लगभग 14 में से 1 किशोर समर्पित मसीही की इस परिभाषा को पूरा करता है। जबकि हमारे नमूने के आधार पर 43% ने मसीहियत को एक धर्म के रूप में मानते हुए अपने आप को जोड़ा, केवल 7% किशोर ही उन विश्वासों और व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं जो दिखाते हैं कि वे अपने मसीही चाल चलन के प्रति समर्पित हैं। कम उम्र के किशोरों की तुलना में बड़े उम्र के किशोरों की अधिक समर्पित मसीही होने की सम्भावना होती है। 13-15 वर्ष की आयु के सिर्फ 5% ; 16-17 वर्ष की आयु के 6%; और 18-19 वर्ष की आयु के 8% किशोर ही समर्पित मसीही हैं।

आयु के अनुसार समर्पित मसीही

5%	6%	8%
13-15	16-17	18-19

विश्व स्तर पर समर्पित मसीही

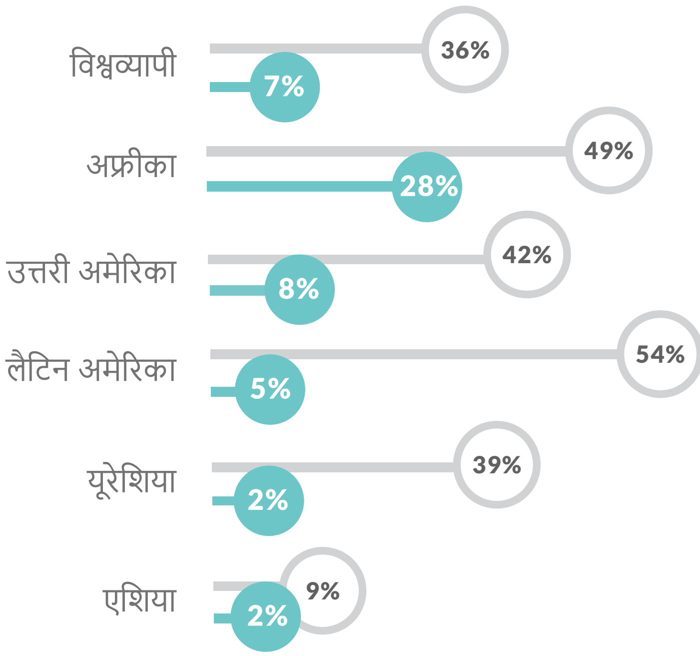

नामधारी मसीही
समर्पित मसीही

दुनिया भर में 14 में से 1 से भी कम किशोर मूल मसीही विश्वासों और व्यवहारों पर जीने के लिये समर्पित हैं।

नामधारी मसीही *वे किशोर हैं जो स्वयं को मसीही के रूप में पहचानते हैं, लेकिन एक समर्पित मसीही की मूल विश्वासों या आदतों में से किसी एक या अधिक को प्रदर्शित नहीं करते हैं जैसा कि पृष्ठ 8 पर परिभाषित किया गया है।*

धार्मिक व्यवहार

समर्पित मसीही युवा इस अध्ययन में नामधारी मसीही के रूप में संदर्भित अन्य मसीही किशोरों की तुलना में स्पष्ट रूप से अलग-अलग धार्मिक व्यवहार और विश्वास प्रदर्शित करते हैं। नामधारी मसीही किशोरों की तुलना में समर्पित मसीहियों में कम से कम साप्ताहिक रूप से कलीसिया में भाग लेने की सम्भावना तीन गुना अधिक है। वे दृढ़ता से विश्वास करते हैं कि उनपर दूसरों के साथ अपने विश्वास को साझा करने की जिम्मेदारी है, और उस विश्वास को सुसमाचार प्रचार के द्वारा अमल में ला रहे हैं। नामधारी मसीहियों की तुलना में समर्पित मसीही गैर-विश्वासियों के साथ आत्मिक बातों में अपने आप को लगभग दो गुना अधिक शामिल करते हैं।

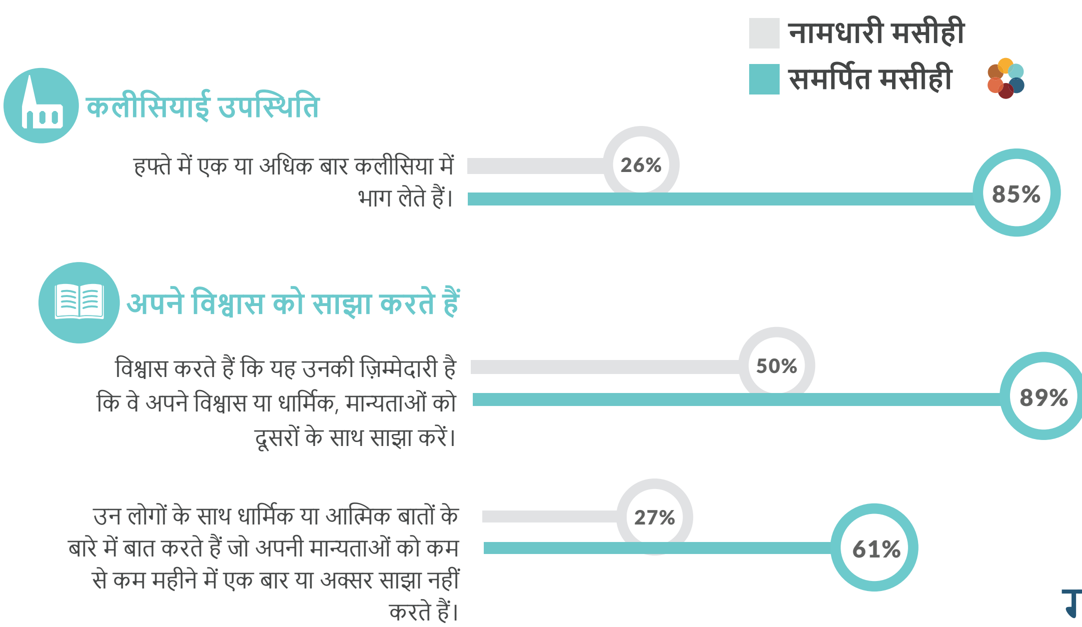

समर्पित होने के लाभ

व्यावहारिक रूप से, हम एक समर्पित मसीही के जीवन में क्या बदलाव देखते हैं?
आँकड़े दिखाते हैं कि एक समर्पित मसीही होने के सकारात्मक लाभ हैं जिसका इनकार नहीं किया जा सकता है।

व्यक्तिगत संघर्ष

पिछले तीन महीनों में, मैंने अनुभव किया है:

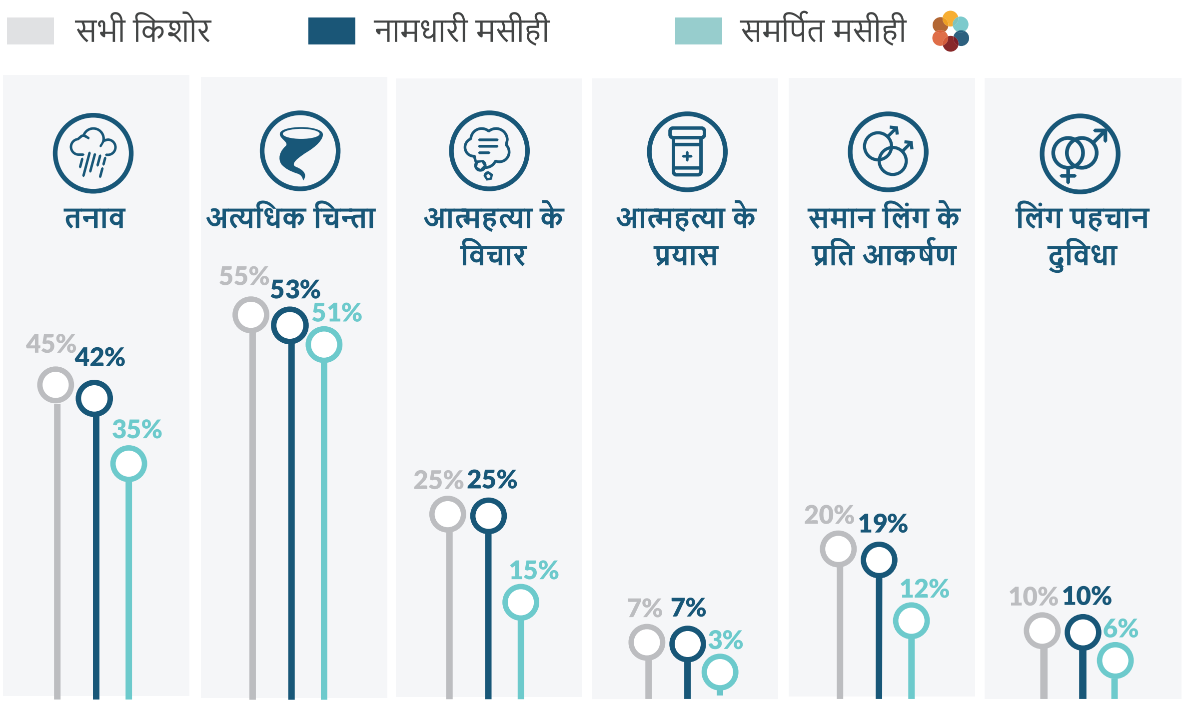

अन्य किशोरों की तुलना में समर्पित मसीहियों में बहुत कम सम्भावना है कि वे हाल ही में निराश हुए थे, या आत्महत्या के विचार आए थे, या पिछले तीन महीनों के भीतर आत्महत्या का प्रयास किए हों। वे इस बात की भी कम रिपोर्ट करते हैं कि वे अपनी लिंग पहचान के बारे में भ्रमित हैं या हाल ही में समान लिंग के प्रति आकर्षण का अनुभव किया है।

करीब-करीब हर बात का जिसका हमने माप तैयार किया उस पर समर्पित मसीहियों ने जोखिम में डालने वाले व्यवहारों और मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों का दर कम बताया,जबकि ये बातें नामधारी मसीहियों में यह आँकड़ा सर्वेक्षण किए गए सभी किशोरों के वैश्विक औसत के बहुत करीब देखा गया।

वैश्विक किशोरों की धार्मिक आदतें

हमने किशोरों की धार्मिक आदतों को मापा जैसे कि उनके विश्वासी समुदाय के साथ इकट्ठा होना, पवित्रशास्त्र पढ़ना, और प्रार्थना करना। आइए, इस पर एक नज़र डालते हैं कि इन क्षेत्रों में मुस्लिम[1], मसीही और अन्य धर्मों[2] के किशोर क्या कर रहे हैं ।

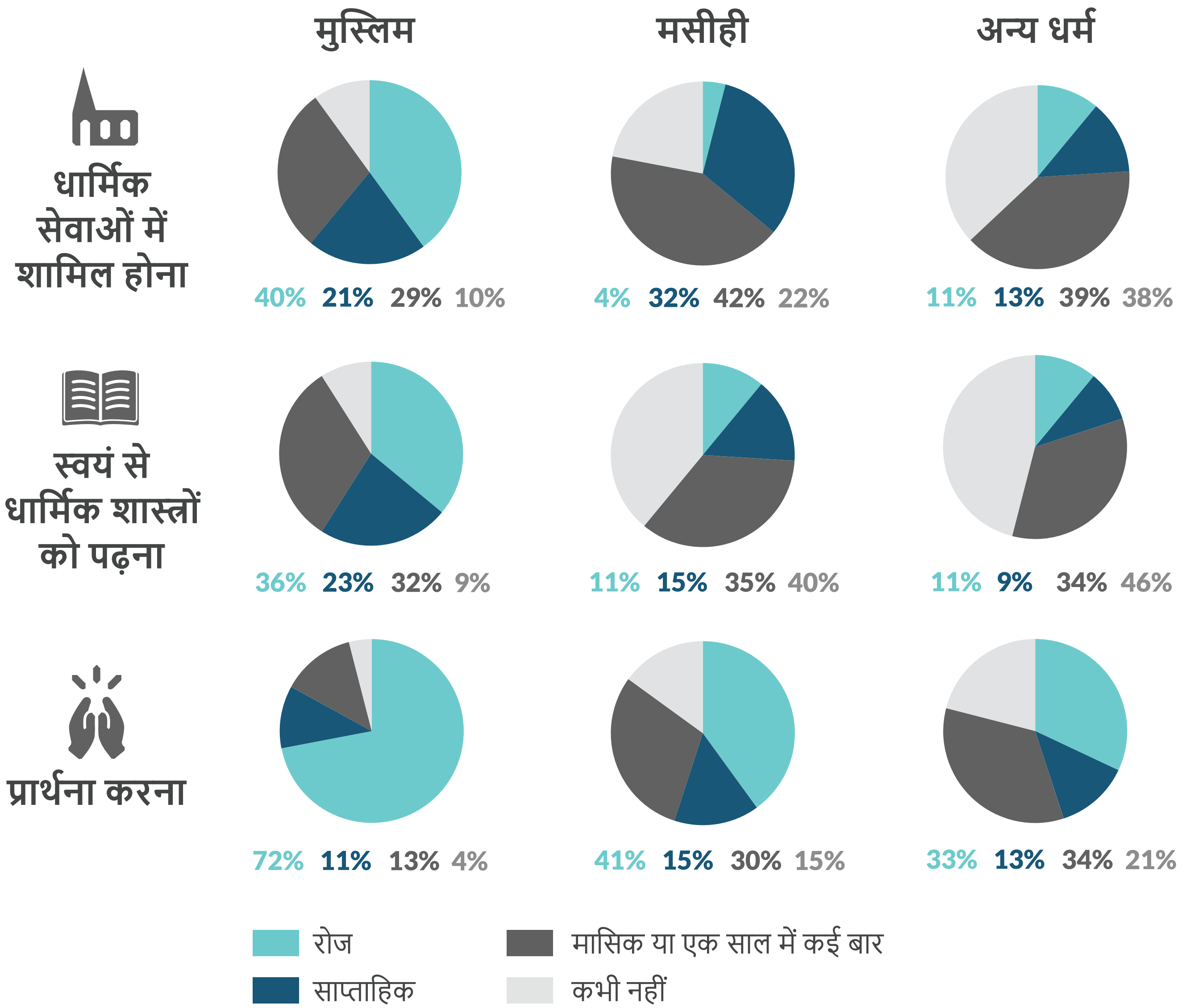

1 ध्यान दें कि मुस्लिम नमूना आबादी नाइजीरिया, भारत और केन्या में कम आबादी के साथ इण्डोनेशिया और मिस्र में केन्द्रित थी।

2 धर्म के आधार पर किशोरों की वैश्विक वितरण दरों के लिये पृष्ठ 7 देखें।

पवित्रशास्त्र के साथ जुड़ाव

52% किशोर कहते हैं कि वे कभी भी धार्मिक ग्रंथ अपने आप से नहीं पढ़ते हैं।

कलीसियाई उपस्थिति

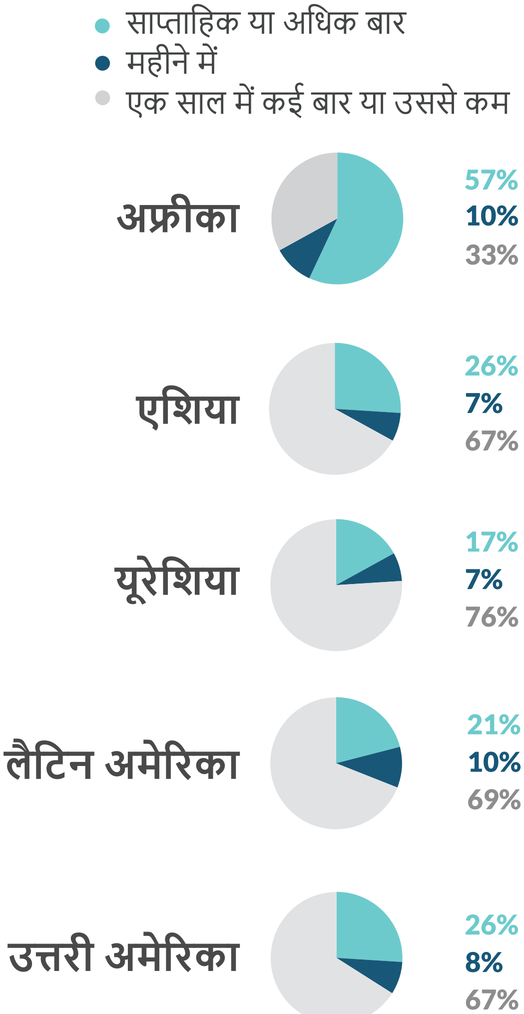

हमने जितने भी किशोरों का अध्ययन किया, उनमें से मुस्लिम सबसे अधिक धार्मिक थे। दस मुस्लिम किशोरों में से नौ कहते हैं कि उनका धर्म पर विश्वास उनकी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है - किसी भी अन्य धर्म के किशोरों की तुलना में यह प्रतिशत बहुत अधिक है। मुस्लिम युवा अपनी धार्मिक आदतों के बारे में सबसे अधिक अनुशासन प्रदर्शित करते हैं। इकसठ प्रतिशत मुस्लिम किशोर कहते हैं कि वे रोजाना या हर हफ्ते मस्जिद जाते हैं, जबकि केवल 36% मसीही ही इस तरह से कलीसिया की सेवकाईयों में भाग लेते हैं। 5 में से 1 मसीही किशोर कहते हैं कि वे कभी कलीसिया नहीं जाते हैं।

हमारे अध्ययन में मुस्लिम युवा ही अपने धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने और प्रार्थना करने के बारे में सबसे अधिक अनुशासित हैं। मुस्लिम हर दिन तीन से अधिक बार कुरान को पढ़ते हैं (36%) जो मसीही किशोरों (11%) से ज्यादा हैं जो अपनी बाइबल को हर दिन पढ़ते हैं। पांच में से दो मसीही किशोर कहते हैं कि उन्होंने कभी अपने आप से बाइबल नहीं पढ़ी।

पवित्र शास्त्र के साथ सबसे कम जुड़ाव

% जो कहते हैं कि उन्होंने इसे कभी नहीं पढ़ा

जितनी बार वे पवित्रशास्त्र पढ़ते हैं, उसकी तुलना में, किशोरों में यह कहने की सम्भावना अधिक है कि उन्हें प्रार्थना करने की आदत है। धर्म के बावजूद, 42% किशोर कहते हैं कि वे हर हफ्ते या हर रोज़ प्रार्थना करते हैं। मुस्लिम बहुत अधिक अनुशासित हैं, 72% बताते हैं, कि वे प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं जबकि अपने आपको मसीही कहने वाले मसीही किशोर 41% और अन्य धर्मों के 33% किशोर ऐसा करते हैं।

आत्मिकता एक पहचान के रूप में

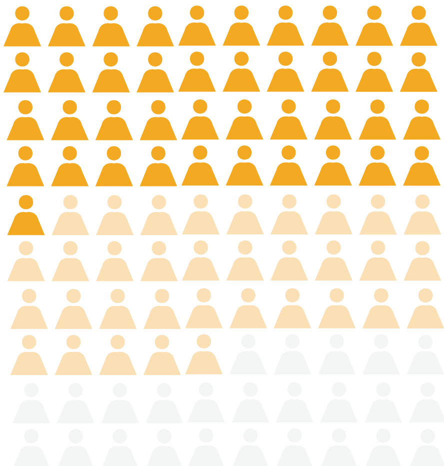

41% किशोर, जो पहले से ही कलीसिया में नहीं जाते, वे कहते हैं कि अगर उन्हें आमन्त्रित किया जाए, तो वे आ सकते हैं।

34% कहते हैं कि वे यकीन से नहीं कह सकते।

मैं किसी मसीही को नहीं जानता

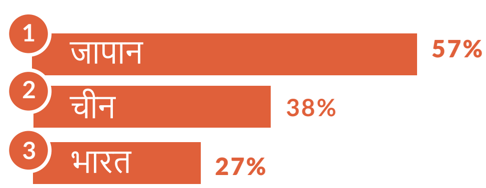

दुनिया भर में किशोर आश्चर्यजनक रूप से उनकी धार्मिक सम्बद्धता के बावजूद आत्मिक होने के विचार के लिये खुले हुए हैं। विश्व स्तर पर तीन में से दो किशोर कहते हैं कि उनका धर्म पर विश्वास या आत्मिक यात्रा उनकी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विशेष रूप से, बिना किसी धर्म के किशोरों का लगभग आधा भाग (44%) ऐसा कहते हैं।

किशोर यह भी कहते हैं कि वे शायद कलीसिया में जाने के निमन्त्रण को स्वीकार कर लेंगे। इकतालीस प्रतिशत किशोर, जो पहले से ही कलीसिया में नहीं जाते, वे कहते हैं कि अगर उन्हें आमन्त्रित किया जाए, तो वे आ सकते हैं, जबकि 34% अन्य यह कहते हैं कि वे यकीन से नहीं कह सकते। केवल 4 में से 1 कहते हैं कि वे नहीं आएँगे। इससे यह लगता है कि आज के किशोर ऐसे खोजी हैं जो आत्मिक अनुभवों के लिये खुले हैं जहाँ उन्हें ऐसा अवसर मिल सकता है।

आँकड़ों से यह भी पता चला है कि किशोर अपने जीवन में विश्वासियों के प्रति एक सकारात्मक सोच रखते हैं। इकहत्तर प्रतिशत गैर-मसीही किशोरों ने कहा कि वे जिन मसीहियों को जानते हैं उनमें से अधिकांश दयालु और देखभाल करने वाले हैं। हालाँकि, कुछ एशियाई देशों में, किशोरों की एक महत्वपूर्ण संख्या ने कहा कि वे किसी भी मसीही को बिल्कुल नहीं जानते हैं।

कलीसिया में आने के लिये खुले

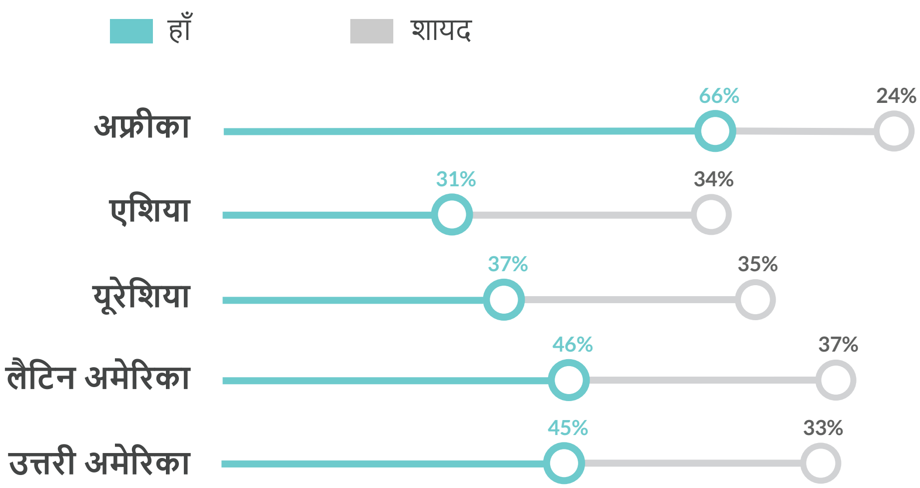

जब सब कुछ सत्य है

आज के किशोर यह कहने को तैयार नहीं हैं कि सत्य केवल एक ही धर्म में पाया जा सकता है। विश्वभर में आधे से अधिक (52%) किशोर मानते हैं कि सभी धर्म समान रूप से मान्य सत्य को सिखाते हैं। मसीही किशोरों में से, इसके सहमति की दर 53% है। कुछ धर्मों, जैसे कि इस्लाम, बौद्ध और हिन्दू धर्म के किशोरों में ऐसा विश्वास करने की सम्भावना अधिक है।

शायद यह इस पीढ़ी के आत्मिक रूप से खुले मनोभाव का परिणाम है, क्योंकि यह मानसिकता धर्म और क्षेत्रों के दायरे में युवा लोगों द्वारा साझा की गई लगती है। वास्तव में, यदि विश्वास उनकी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, तो किशोरों की इस स्थिति (67%) को लेने की सम्भावना—बिल्कुल कम नहीं हैं। यह आज की पीढ़ी के रुचिपूर्ण विरोधाभास की ओर इशारा करता है। युवा इस बात पर जोर देते हैं कि आत्मिक यात्रा उनकी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, बिना इस दृष्टिकोण के कि सच्चाई कहाँ पाई जा सकती है। यहाँ तक कि मसीही किशोर भी इस विचार से प्रभावित दिखाई देते हैं। एक महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक (30%) इस कथन से असहमत है कि पापों की क्षमा यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा ही सम्भव है।

वैश्विक स्तर पर 52% किशोर मानते हैं कि सभी धर्म समान रूप से मान्य सत्य को ही सिखाते हैं।

46% किशोर कहते हैं कि वे कभी भी दूसरों के साथ धार्मिक या आत्मिक बातों के बारे में बात नहीं करते हैं जो उनकी अपनी मान्यताओं को साझा नहीं करते।

आत्मिक मान्यताएँ काफी हद तक व्यक्तिगत होती हैं, साम्प्रदायिक नहीं। लगभग आधे (46%) किशोर कहते हैं कि वे कभी भी दूसरों के साथ धार्मिक या आत्मिक बातों के बारे में बात नहीं करते हैं जो उनकी अपनी मान्यताओं को साझा नहीं करते हैं। लगभग 10 में से 3 कहते हैं कि वे इस प्रकार की आत्मिक बातचीत हर महीने या अक्सर करते हैं, और मसीही किशोर औसत से बहुत अधिक सुसमाचार प्रचार नहीं कर रहे हैं।

आत्मिक बातचीत का होना

किशोर कितनी बार धार्मिक या आत्मिक बातों के बारे में लोगों के साथ बात कर रहे हैं जो उनकी अपनी मान्यताओं को साझा नहीं करते हैं (मासिक या अक्सर)

सभी किशोर	मसीही	मुस्लिम	अन्य धर्म
28%	32%	46%	35%

इस अध्ययन में पाया गया कि **44% मसीही किशोर** यह नहीं मानते कि उनपर दूसरों के साथ अपने विश्वास को साझा करने की जिम्मेदारी है।

निष्कर्ष

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि किशोरों के धार्मिक प्रवृति और व्यवहार का यह चित्र एक "क्षणिक तस्वीर" है। ये आदतें युवाओं के जीवन में बैठ चुकी हैं और उनकी उम्र के अनुसार बहुत अलग हो सकती है। लेकिन अभी के लिये, यह शोध हमें किशोरों के प्रति महत्वपूर्ण जानकारी देता है और कुछ व्यावहारिक प्रभाव और प्रयोगों की ओर इशारा करता है।

- **इस पीढ़ी के आत्मिक खुलेपन के अवसर का लाभ उठाएँ।**
  यह पीढ़ी आत्मिक होने के विचार के लिये एक खुलापन प्रदर्शित करती है और कई गैर-विश्वासियों का कहना है कि वे कलीसिया जाने की इच्छा रखते हैं। इसके अलावा, उनके पास पहले से ही मसीहियों के प्रति दयालु और देखभाल करने वाले सकारात्मक सोच भी है। आपस में इस बात को बाँटते हुए जो बातचीत शुरू होती है कि मनुष्य से आत्मिक होने की अपेक्षा की जाती है, तो ये गहरे विश्वास के लिये खोज के द्वार खोल सकते हैं।

- **मसीह के पीछे चलना पहचान और अनुशासन दोनों है।**
  किशोर जो मसीही धर्म के मूल विश्वासों को थामे हुए हैं और जिन्हें वे पवित्रशास्त्र पढ़ने और प्रार्थना की आदतों से जोड़ते है, उनके जीवन में नामधारी मसीहियों या अन्य किशोरावस्था की जीवन्त वास्तविकताओं की तुलना में कई सकारात्मक अन्तरों को देख सकते हैं। इस पीढ़ी का शिष्यत्व जो इन प्रमुख मान्यताओं और विश्वासों पर ध्यान केन्द्रित करता है उनके जीवन के कई हिस्सों को व्यवस्थित कर सकता है।

- **कुछ सच्चाइयाँ विशेष होती हैं।**
  इस अध्ययन में मसीही किशोर सत्य के विशेष दृष्टिकोण के लिये समर्पित होने की इच्छा नहीं रखते हैं या उस सच्चाई को दूसरों के साथ साझा करने के लिये एक जिम्मेदारी को नहीं लेते हैं। हम कैसे किशोरों को सुसमाचार के विशेष दावों को समझने में मदद कर सकते हैं और सहिष्णुता और समानता का प्रचार करने वाली संस्कृति में रहने के के लिये तनावों का निराकरण कर सकते हैं?

व्यक्तिगत अनुभव और संघर्ष

हमें क्या पता चला

किशोरों की एक बड़ी संख्या अपने मानसिक स्वास्थ्य; जैसे कि बताते हैं अकेलापन, अवसाद, भारी चिन्ता और आत्महत्या के विचार और प्रयासों के साथ संघर्ष कर रहे हैं।

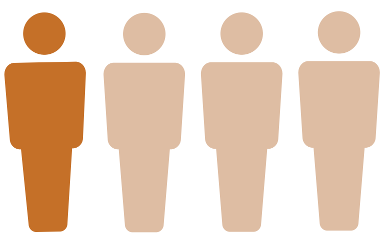

विश्व स्तर पर

4 में से 1

किशोर ने **पिछले तीन महीनों के अन्दर आत्महत्या करने के विचार किए थे।**

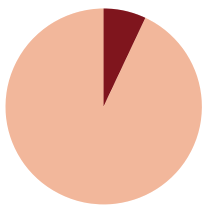

14 में से 1 का कहना है कि उन्होंने पिछले तीन महीनों के भीतर अपने जीवन को ख़त्म करने की **कोशिश** की थी।

जब उनके मानसिक स्वास्थ्य की बात आती है तो **लड़कियों में लड़कों की तुलना में अधिक संघर्ष हो रहा है** और **लगभग दुगुनी बार उन्होंने आत्महत्या का प्रयास किया।**

विश्व स्तर पर किशोर

विश्व स्तर पर **10 में से 3** किशोर पिछले तीन महीनों में यौन रूप से सक्रिय रहे हैं।

मसीही

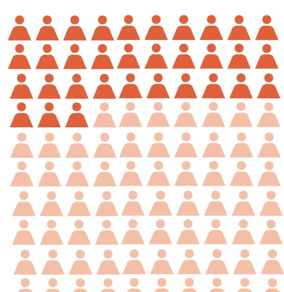

मसीहीयों के बीच यह दर और भी **अधिक है** (3 में से 1)।

टिप्पणी: यह अविवाहित किशोरों को दर्शाता है

5 में से 1

किशोर पिछले तीन महीनों के भीतर **अपने समान लिंग के किसी व्यक्ति के प्रति यौन आकर्षण महसूस कर रहे हैं।**

मानसिक स्वास्थ्य पर चिन्ता व्यक्त करना

किशोरावस्था जीवन का एक ऐसा समय है जो कई स्तरों पर कठिनाइयों से भरा हो सकता है। किशोर इस बात से जूझ सकते हैं कि वे कौन हैं और वे कौन बन रहे हैं; वे किस बात में अच्छे हैं और जीवन में क्या करना चाहते हैं; सम्भावित रोमान्चित रिश्तों को कैसे आगे बढ़ाएँ और अपने साथी समूह में अपनी जगह पर समझौता करने का जिक्र नहीं करते। युवा लोगों के लिये बहुत कुछ चल रहा है, और इस अध्ययन में किशोर हमें बताने में सामने आए कि वे कुछ गम्भीर मुद्दों का सामना कर रहे हैं।

लगभग 3 में से 2 किशोरों ने अकेलेपन महसूस करने की सूचना दी, आधे से अधिक ने भारी चिन्ता और लगभग आधे ने अवसाद[1] की सूचना दी। फरवरी-मार्च 2020 में एकत्र किए गए आँकड़ों के साथ, किशोरों ने अपने जीवन के पिछले तीन महीनों के भीतर अपने व्यक्तिगत अनुभवों और संघर्षों की जानकारी दी। इसका मतलब यह है कि किशोर कोरोनोवायरस महामारी के व्यापक प्रभाव का अनुभव करने से पहले के जीवन के बारे में बता रहे थे, जिसके परिणामस्वरूप पूरे देश में तालाबन्दी और चिकित्सकीय जाँच और देखरेख लागू हुआ।

विश्व स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य

पिछले तीन महीनों के भीतर, मैंने अनुभव किया है:

1 कृपया ध्यान दें: ये आवश्यक रूप से चिकित्सकीय स्तर के अवसाद या चिन्ता नहीं हैं। किशोरों ने प्रदान किए गए शब्द रूपों की व्याख्या अपने स्वयं के लिये किया और अपने आप से रिपोर्ट किया यदि उन्हें लगता था कि उन्होंने उनका अनुभव किया है।

हमने किशोरों को अपने बारे में बताने के लिये भी कहा, कि क्या उन्होंने पिछले तीन महीनों के भीतर आत्महत्या के विचारों का अनुभव किया या आत्महत्या का प्रयास किया।

वैश्विक स्तर पर चार में से एक किशोर ने आत्महत्या का विचार किया, जिसमें चार देशों ने 3 में से 1 या उससे अधिक की दर से रिपोर्टिंग की। आत्महत्या का विचार एक आकस्मिक और बड़े पैमाने पर पूरी तरह से अकेलेपन की सोच से लेकर विस्तृत और शामिल योजना के सभी रूपों को ले सकता है।

विश्व स्तर पर 4 में से 1 किशोर ने आत्महत्या के विचारों को बताया।

प्रमुख देश

आत्महत्या के विचार

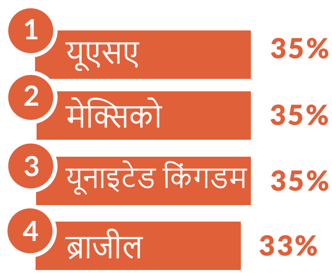

आत्महत्या के प्रयास

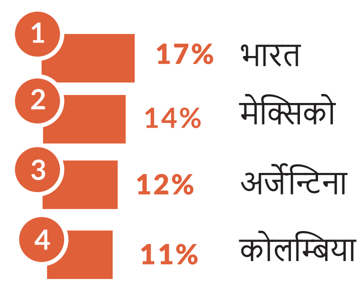

यकीनन, सभी आत्महत्या के विचार वास्तविक प्रयासों की ओर नहीं जाता है। हालॉकि, विश्व स्तर पर 7% किशोरों (14 में से 1) ने पिछले तीन महीनों के भीतर एक बार प्रयास करने की जानकारी दी, जिसमें चार देशों ने 10 में से 1[1] से अधिक की दर होने की जानकारी दी।

आत्महत्या के प्रयासों के समक्ष इस अध्ययन में एक उल्लेखनीय बात सामने आई कि छोटे किशोरों ने बड़े किशोरों की तुलना में इस बात की अधिक जानकारी दी।

आयु के आधार पर आत्महत्या के प्रयास

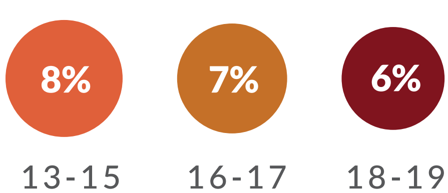

1 यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आँकड़े किशोरों द्वारा अपने बारे में रिपोर्ट किया गया है, न कि अस्पताल के रिकॉर्ड या देश की घटना रिपोर्टिंग से लिया गया है जो कई मामलों में इस विषय पर अन्य शोध अध्ययनों का आधार बनता है।

किशोर अन्धकार में हैं

इस विषय पर शोध साहित्य उन कई कारकों की ओर इशारा करता है जैसे कि समलैंगिक मुद्दे, मादक द्रव्यों का सेवन, छेड़छाड़ और चिन्ता या अवसाद[1] के लक्षण किसी युवा के आत्महत्या के जोखिम के साथ जुड़े हो सकते हैं। हमारे शोध से भी ऐसे ही सम्बन्ध सामने आए हैं। ऐसे किशोर जो लिंग पहचान या एक ही लिंग के प्रति आकर्षण से जूझ रहे हैं, उनमें आत्महत्या का खतरा सबसे अधिक है, उन किशोरों के साथ जो ऑनलाइन छेड़छाड़ के शिकार होने की सूचना देते हैं और जो मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से जूझ रहे हैं। शराब और नशीली दवा का उपयोग भी आत्महत्या के विचार और प्रयासों की उच्च दर के कारणों के रूप में देखा गया है।

7 कारक जो उच्च आत्महत्या के जोखिम के साथ सम्बन्ध रखते हैं

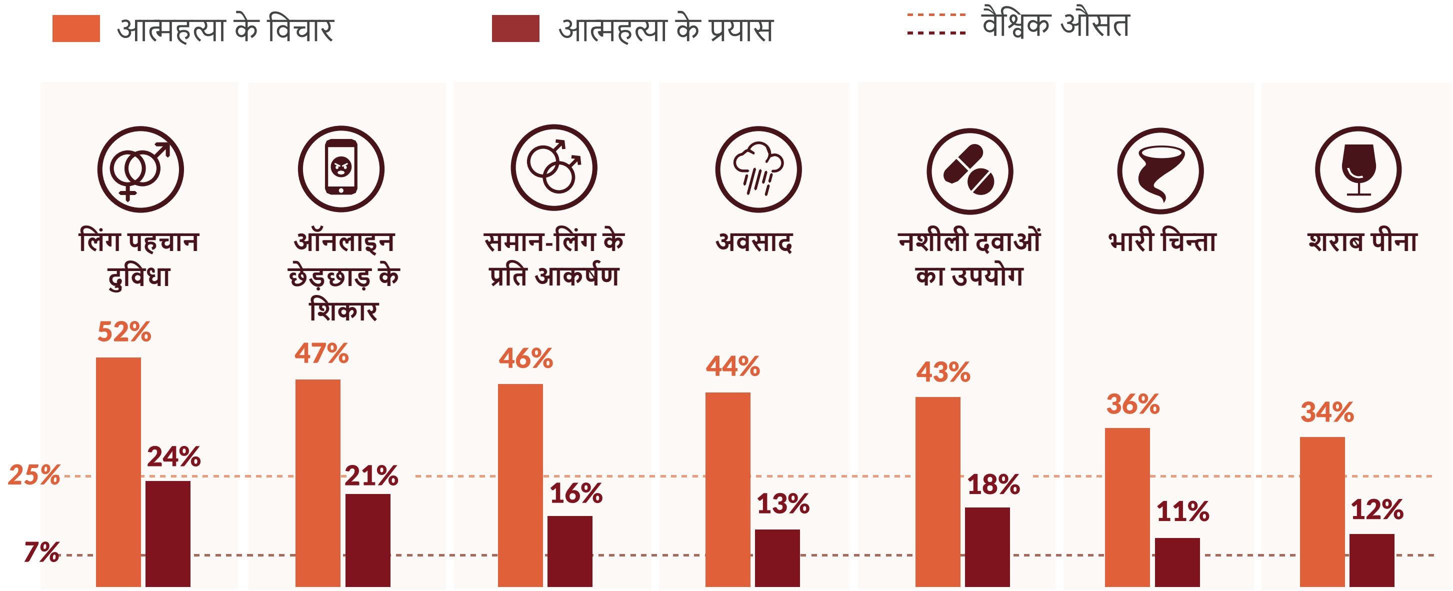

आत्महत्या के प्रयास, आत्महत्या के विचारों की तरह ही लापरवाह व्यवहारों की एक निरन्तरता के कारण आते हैं जो जीवन के व्यवस्थित और केन्द्रित कोशिशों को कम मूल्य देते हैं। यह जरूरी नहीं कि यही वह एक घटना है जो किशोरों को उनके जीवन को खत्म करने के लिये प्रेरित करती है, लेकिन ऐसे छोटे छोटे कदमों और विचारों की एक श्रृंखला हो सकती है जो एक दूसरे पर बनते जाते हैं। हमारे अध्ययन में रिपोर्ट किए गए कुछ प्रयास इतने गम्भीर नहीं थे कि उन्हें किसी तरह का चिकित्सा सम्बन्धी उपचार दिया जाए।

लेकिन विशेष परिस्थितियों के बावजूद, यह आँकड़ा दिखाता है कि कुछ किशोर बहुत ही अन्धकार में हैं जो उन्हें निराशाजनक कदम उठाने की ओर ले जा रहे हैं। यह आँकड़ा किशोरों के जीवन में इस मुद्दे के गम्भीर प्रकृति और महामारी अनुपात को रोकने और प्रतिबिम्बित करने के कारण को दर्शाता है। जब आत्महत्या की बात आती है, तो हम एक पृष्ठ पर संख्या या नमूने के प्रतिशत को नहीं देख रहे होते हैं - परन्तु वास्तव में लोगों के जीवन को देखते हैं। जिसका अर्थ है कोई भी संख्या बहुत अधिक है।

1 सीडीसी वन्डर ऑनलाइन डेटाबेस, मृत्यु के कारण, 2015-2017 में दर्ज मृत्यु के अनेक कारण को रेखांकित करता है। AmericasHealthRankings.org, Accessed 2020.

लडकियाँ अधिक संघर्ष करती हैं

किशोर लडकियाँ किशोर लड़कों की तुलना में बहुत अधिक संघर्ष करती हैं जब यह उनके मानसिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण की बात होती है। यह सम्भव है कि लडकियाँ उन संघर्षों को ज़ाहिर करने के लिये अधिक स्वतंत्रता महसूस कर सकती हैं जो वे अनुभव करती हैं। इसके बावजूद, लड़कियों और लड़कों के बीच क्षेत्रों और धर्मों के बीच काफी भिन्नता देखी जा सकती है।

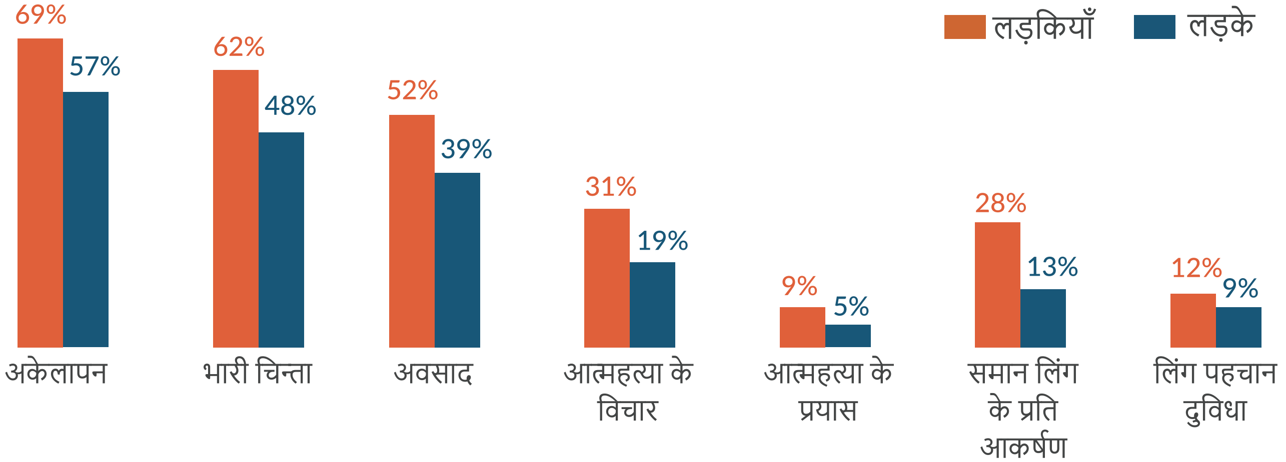

यह उल्लेखनीय है कि एक समर्पित मसीही होने के कारण यहाँ कहानी नहीं बदलती है। व्यक्तिगत संघर्ष दर समर्पित मसीहियों में कुल मिलाकर कम देखी गई, लेकिन इनमें से प्रत्येक भाग में लड़कों और लड़कियों के बीच महत्वपूर्ण अन्तर बना हुआ है।

किशोर और यौनक्रिया

किशोरावस्था यौन प्रयोग का समय हो सकता है। वैश्विक स्तर पर, पिछले तीन महीनों में 10 में से 3 किशोरों ने रिपोर्ट किया कि वे यौन रूप से सक्रिय हैं। यह सम्भावित व्यवहारों के एक व्यापक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकता है, लेकिन इस सवाल के जवाब में किशोर अपने लिये खुद परिभाषित करते हैं कि यौन रूप से सक्रिय होने का क्या अर्थ है। जिन किशोरों ने विवाहित होने की सूचना दी, वे इसमें शामिल नहीं किए गए थे यह सुनिश्चित करने के लिये कि यह आँकड़ा केवल विवाह सन्दर्भ के बाहर यौन गतिविधि का प्रतिनिधित्व करता है। यौन गतिविधि की रिपोर्ट अफ्रीकी किशोरों ने सबसे अधिक, और एशियाई किशोरों ने सबसे कम की।

देश के अनुसार यौन सक्रियता

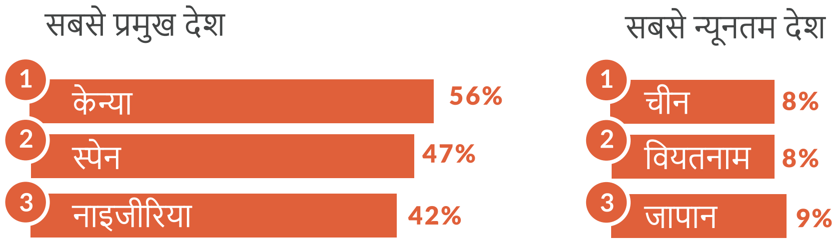

आयु के अनुसार यौन सक्रियता

युवा किशोरों (13-15) की तुलना में बड़े किशोरों (18-19) के बीच यौन गतिविधि तीन गुना अधिक पाई गई।

हालॉकि, 16 से कम उम्र के 10 में से 1 से अधिक किशोरों ने अभी हाल ही में यौन गतिविधि की सूचना दी हैं। हर उम्र में नामधारी मसीहियों के बीच इसकी संख्या अधिक थी। लड़कों और लड़कियों में लगभग समान रूप से यौन सक्रियता की सम्भावना थी।

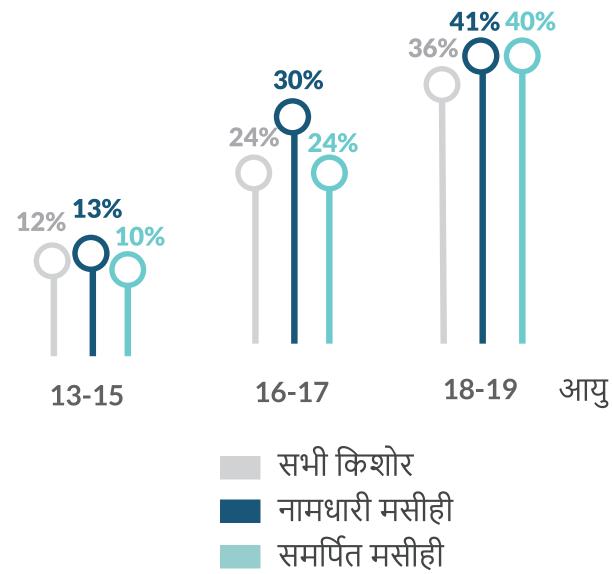

मसीही किशोरों की प्रतिक्रिया

यौन गतिविधि में शामिल होना एक ऐसा व्यवहार प्रतीत होता है जिसमें कुछ किशोर इस विषय के बारे में अपनी नैतिक मान्यताओं को अनदेखा कर देते हैं। किसी भी अन्य धर्म के किशोरों की तुलना में मसीही किशोर हाल की यौन गतिविधियों के बारे में औसत रिपोर्ट करते हैं। हालॉकि वे बाइबल के इस बात से सहमत हैं कि यौन क्रियाएँ शादी के लिये आरक्षित होनी चाहिए, लेकिन समर्पित मसीही किशोरों के भी नामधारी मसीहियों की तरह यौन गतिविधियों में शामिल होने की सम्भावना है।

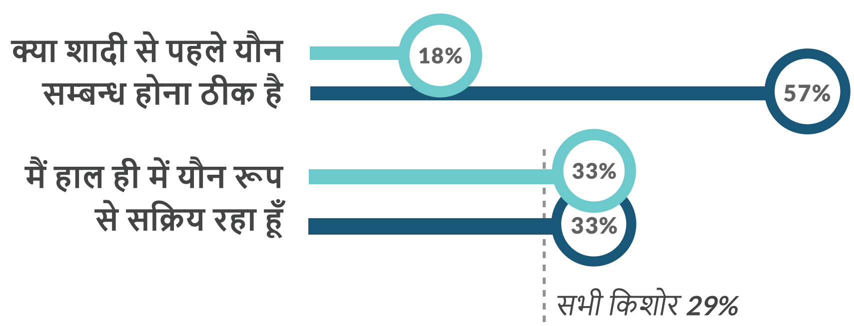

क्या शादी से पहले यौन सम्बन्ध होना ठीक है?

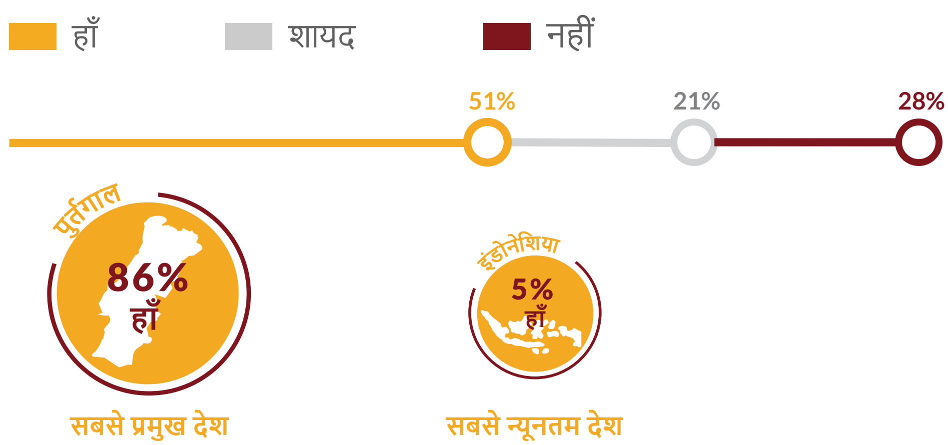

पोर्नोग्राफी (अश्लील सामग्री) एक वास्तविक समस्या है

लगभग आधे (48%) किशोरों ने माना कि वे अश्लील सामग्री देखते हैं।

पिछले 3 महीनों के भीतर अश्लील सामग्री को देखने के लिये लड़कियों की तुलना में लड़कों की (56% बनाम 40%) सम्भावना बहुत अधिक है।

उम्र के हिसाब से आँकड़ों में बदलाव है, जिसमें बड़ी उम्र के किशोर छोटे उम्र के किशोरों से ज्यादा पोर्नोग्राफी का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन युवा होना इस बात की गारन्टी नहीं देता है कि आप इस से बच गए हैं। 13-15 उम्र के, 5 में से 2 का कहना है कि उन्होंने हाल ही में अश्लील सामग्री देखी हैं।

48% किशोरों ने कहा कि उन्होंने हाल ही में अश्लील सामग्री देखी हैं।

आयु के अनुसार अश्लीलता का इस्तेमाल

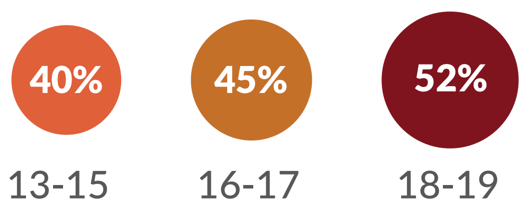

मसीही किशोरों की प्रतिक्रिया

निष्कर्ष

जिन संघर्षों की किशोर रिपोर्ट कर रहे हैं उन पर हमें गहराई से चिन्ता करनी चाहिए। हर युवा की स्थिति अलग अलग है, और उनके सामने आने वाली चुनौतियों का कोई जवाब नहीं है। लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि हम उन वास्तविकताओं की प्रकृति और गम्भीरता के बारे में जानें जो किशोर अनुभव करते हैं। जिस प्रकार हम सहानुभूति से अमल करने की ओर आगे बढ़ते हैं यहाँ ध्यान देने योग्य कुछ अतिरिक्त बातें दी गई हैं:

- **मसीही किशोरों को यौन क्रियाओं के क्षेत्र में अनुशासित करने की आवश्यकता है।**
  आज के कई युवा यौन सम्बन्ध को शादी के पवित्र संदर्भ से अलग कर रहे हैं और इसे केवल व्यक्तिगत सुख के लिये एक उपकरण मानते हैं। समर्पित मसीही एक समझदारी को प्रदर्शित करते हैं कि शादी से पहले यौन सम्बन्ध गलत है, लेकिन उनके नैतिक उथल पुथल उन्हें यौन गतिविधियों में शामिल होने से नहीं रोक पा रहे हैं। सिर्फ किशोरों को यह सिखाना ही काफी नहीं है कि बाइबल क्या कहती है। हम युवाओं का मार्गदर्शन अधिक से अधिक बाइबल जीवनशैली की ओर कैसे कर सकते हैं जो यौन क्रिया के उपहार को महत्व देता और प्रबन्धन करता है?

- **अश्लील सामग्री का उपयोग इस पीढ़ी के लिये एक गम्भीर मुद्दा है।**
  आँकड़े दिखाते हैं कि हम यह नहीं मान सकते कि उम्र या धर्म किसी किशोर को अश्लील सामग्री देखने से बचाते हैं। यहाँ तक कि मसीही विश्वास रखने वाले और मसीही अनुशासन का पालन करने वाले किशोर भी इस क्षेत्र में संघर्ष कर रहे हैं।

- **लड़कियों को अतिरिक्त समर्थन की आवश्यकता हो सकती है।**
  लिंग के आधार पर व्यक्तिगत संघर्ष दरों में अन्तर होता है और लड़कियों के बीच इसके उच्च दर को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। एक समर्पित मसीही होने के नाते पूरी मदद मिलती है, लेकिन लिंग के अन्तर को बन्द नहीं करता है। उन विशेष संघर्षों पर गौर कीजिए जिनका सामना लड़कियों को करना पड़ रहा है और हम किस तरह से विश्वास में परिपक्व महिलाओं को इस अगली पीढ़ी को अनुशासित करने के लिये सशक्त बना सकते हैं।

डिजिटल जुड़ाव और प्रभाव

हमें क्या पता चला

किशोर रोजाना औसतन
7 घंटे और 23
मिनट ऑनलाइन पर बिता रहे हैं।

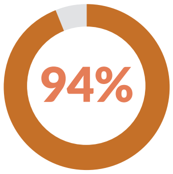

किशोर कहते हैं कि
वे **हर दिन वीडियो
देखते हैं।**

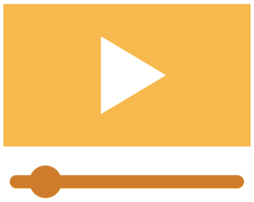

किशोर जो **भारी इन्टरनेट
उपयोगकर्ता** हैं (हर दिन 10+
घंटे) वे **अपने मानसिक स्वास्थ्य
के लिये अधिक संघर्ष कर रहे हैं।**

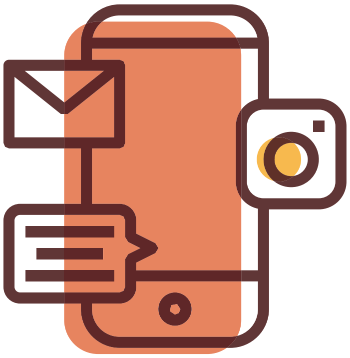

अधिकांश किशोर
कहते हैं कि
**सोशल मीडिया
उनके जीवन
की सन्तुष्टि में
योगदान
देता है।**

64%
किशोर **रोजाना
एक घंटा या उससे
कम समय** के लिये
सोशल मीडिया का
इस्तेमाल करते हैं।

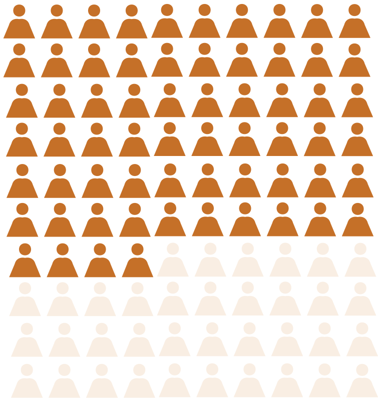

ऑनलाइन पर समय बिताया गया

यह सबसे अधिक डिजिटल रूप से जुड़ी पीढ़ी है जिसे दुनिया ने अभी तक देखा है। आज के किशोर इन्टरनेट पर बड़े हुए हैं, कम उम्र से ही उनके हाथ में स्मार्टफोन आ गया था, और सोशल मीडिया के बिना दुनिया को कभी नहीं जाना था।

इन्टरनेट से जुड़ा होना इस शोध अध्ययन में भागीदारी के लिये एक आवश्यक ज़रुरत थी। इस शोध के प्राथमिक उद्देश्यों में से एक किशोरों के विचारों, विश्वासों और व्यवहारों पर डिजिटल जुड़ाव के प्रभावों की जाँच करना था।

किशोर कितना समय ऑनलाइन बिता रहे हैं? जुड़े रहने के दौरान वे क्या कर रहे हैं? उनका तकनीकी उपयोग उनके जीवन में अन्य चीजों को कैसे प्रभावित कर रहा है? ये सभी इस अध्ययन में पूछे गए कुछ प्रश्न थे।

सर्वेक्षण किए गए 20 देशों में किशोर प्रतिदिन औसतन 7 घंटे और 23 मिनट ऑनलाइन बिता रहे हैं। ब्राज़ील में युवा लोग रोजाना लगभग 9.5 घंटे सबसे अधिक ऑनलाइन और वहीं दूसरी ओर, चीन में किशोर हर रोज़ सबसे कम 5.5 घंटे ऑनलाइन बिताने की रिपोर्ट मिली हैं।

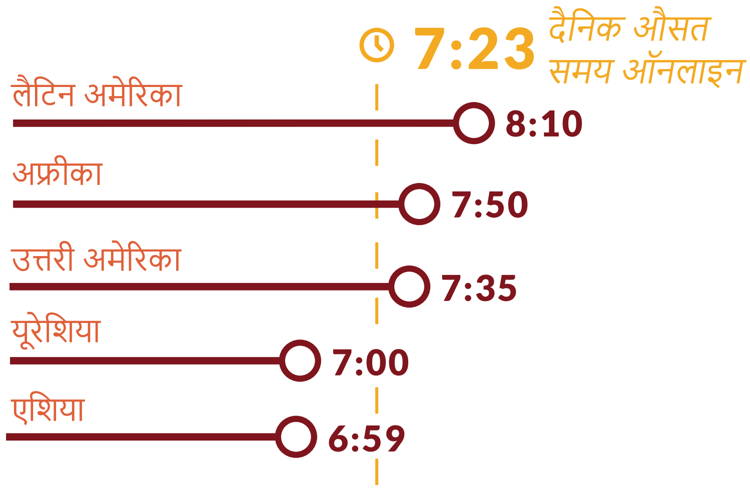

	देश
9:29	ब्राजील
9:07	इण्डोनेशिया
8:29	अर्जेन्टिना
8:28	नाइजीरिया
7:54	रूस
7:40	केन्या
7:35	संयुक्त राज्य
7:34	भारत
7:22	मेक्सिको
7:22	दक्षिण अफ्रीका
7:19	कोलंबिया
7:19	यूनाइटेड किंगडम
7:08	पुर्तगाल
6:50	वियतनाम
6:45	स्पेन
6:43	मिस्र
6:42	नीदरलैंड
6:29	रोमानिया
6:03	जापान
5:24	चीन

किशोर 7 घंटे से अधिक समय ऑनलाइन बिता रहे हैं

ऑनलाइन व्यस्तता

किशोर उन सभी घंटों में क्या करते हैं जब वे ऑनलाइन पर व्यस्त होते हैं? किशोर कहते हैं कि वे सबसे ज्यादा समय बात करने, संदेश भेजने या वीडियो चैटिंग में बिताते हैं। सोशल मीडिया पर दूसरे सबसे अधिक घंटे बिताए जाते हैं, ऑनलाइन वीडियो या फिल्में देखने में और सबसे कम समय खेल (गेमिंग) के लिये होता है।

विश्व स्तर पर सक्रियता के अनुसार बिताया गया समय

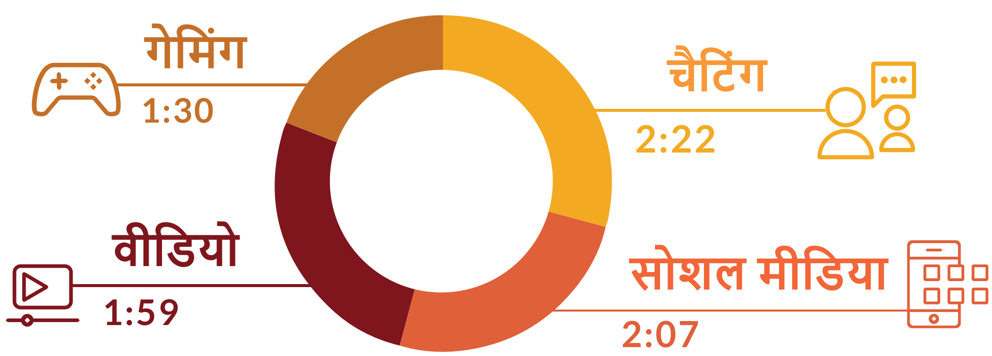

सबसे प्रमुख देश

कुछ देशों में किशोर इन गतिविधियों में से प्रत्येक पर वैश्विक औसत से भी बहुत अधिक समय बिता रहे हैं।

चैटिंग

केन्या 3:45

सोशल मीडिया

नाइजीरिया 4:00

वीडियो देखना

यूएसए 2:47

गेमिंग

अर्जेन्टिना 2:38

सामूहिक समय बिताना ही एकमात्र ऐसा तरीका नहीं है जिसमें किशोर रूचि लेते हैं। ऑनलाइन गतिविधियाँ जिनमें वे नियमित रूप से लौटते हैं, वे भी उनके डिजिटल जुड़ाव की तस्वीर बनाते हैं। किशोरों के बीच सबसे लोकप्रिय दैनिक गतिविधि वीडियो देखना है।

चौरानवे प्रतिशत किशोरों का कहना है कि वे हर दिन वीडियो देखते हैं। उसके बाद, दूसरी सबसे लोकप्रिय गतिविधि सोशल मीडिया है। लगभग सभी किशोर हर दिन नियमित रूप से सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, हालाँकि 64% कहते हैं कि वे इन प्लेटफार्मों पर केवल एक घंटा या उससे भी कम समय बिताते हैं।

किशोरों में पूर्ण रूप से सोशल मीडिया पर मिश्रित प्रतिक्रियाएँ थी। कई लोग इसे सकारात्मक उपस्थिति के रूप में मानते हैं, जहाँ पाँच में से तीन किशोर इस बात से सहमत हैं कि सोशल मीडिया उन्हें अपने जीवन में सन्तुष्टि महसूस करने में मदद करता है।

हालाँकि, आधे से अधिक किशोरों ने कहा कि यह कभी-कभी या अक्सर उन्हें दुःखी, चिन्तित या उदास महसूस कराता है।

94% किशोर हर दिन वीडियो देखते हैं।

64% किशोर कहते हैं कि वे रोजाना सोशल मीडिया पर एक घंटा या उससे भी कम समय बिताते हैं।

सोशल मीडिया मुझे दुःखी, चिन्तित या उदास महसूस कराता है।

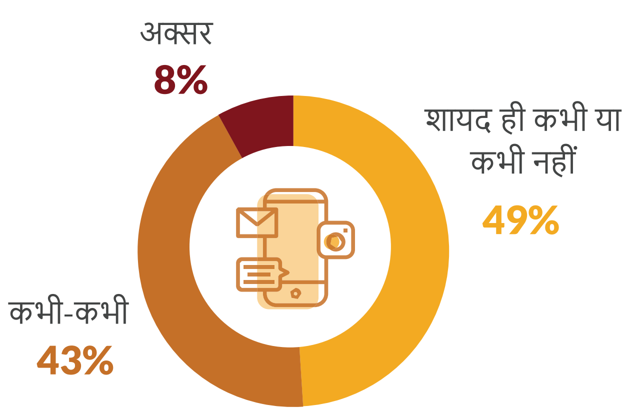

इन्टरनेट का प्रभाव

हमें किशोरों से उनकी उपयोग की आदतों और ऑनलाइन समय के बारे में कई प्रकार की प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं, जिसने हमें किशोरों को अलग अलग श्रेणी में जैसे कि बहुत कम इन्टरनेट उपयोगकर्ता (प्रतिदिन 0-4 घंटे) और बहुत अधिक इन्टरनेट उपयोगकर्ता (प्रतिदिन 10+ घंटे ऑनलाइन) के रूप में बाँटने को प्रेरित किया। इस नज़र से आँकड़ों को देखने से कुछ रुचिपूर्ण निष्कर्षों का पता चलता है।

जब जीवन में उनके लक्ष्यों की बात आती है, तो जो किशोर बहुत अधिक इन्टरनेट उपयोगकर्ता होते हैं, उनमें उन किशोरों की तुलना में व्यवसायिक दृष्टिकोण को व्यक्त करने की अधिक सम्भावना होती हैं और अपने करियर के लक्ष्यों में धन सम्बन्धी बातों में अधिक रूचि रखनेवाले होते हैं जो बहुत कम इन्टरनेट उपयोगकर्ता होते हैं। किशोर अपने परिवारिक अनुभव में भी काफी अन्तर व्यक्त करते हैं। बहुत अधिक इन्टरनेट उपयोगकर्ताओं का यह कहने की संभावना कम होती है कि उनका परिवारिक अनुभव अच्छा रहा है, और यह भी कहने की सम्भावना अधिक है कि वे शायद ही कभी अपने माता-पिता से उन मुद्दों के बारे में बात करते हैं जो वास्तव में उनके लिये मायने रखते हैं।

इन्टरनेट का उपयोग और जीवन अनुभव

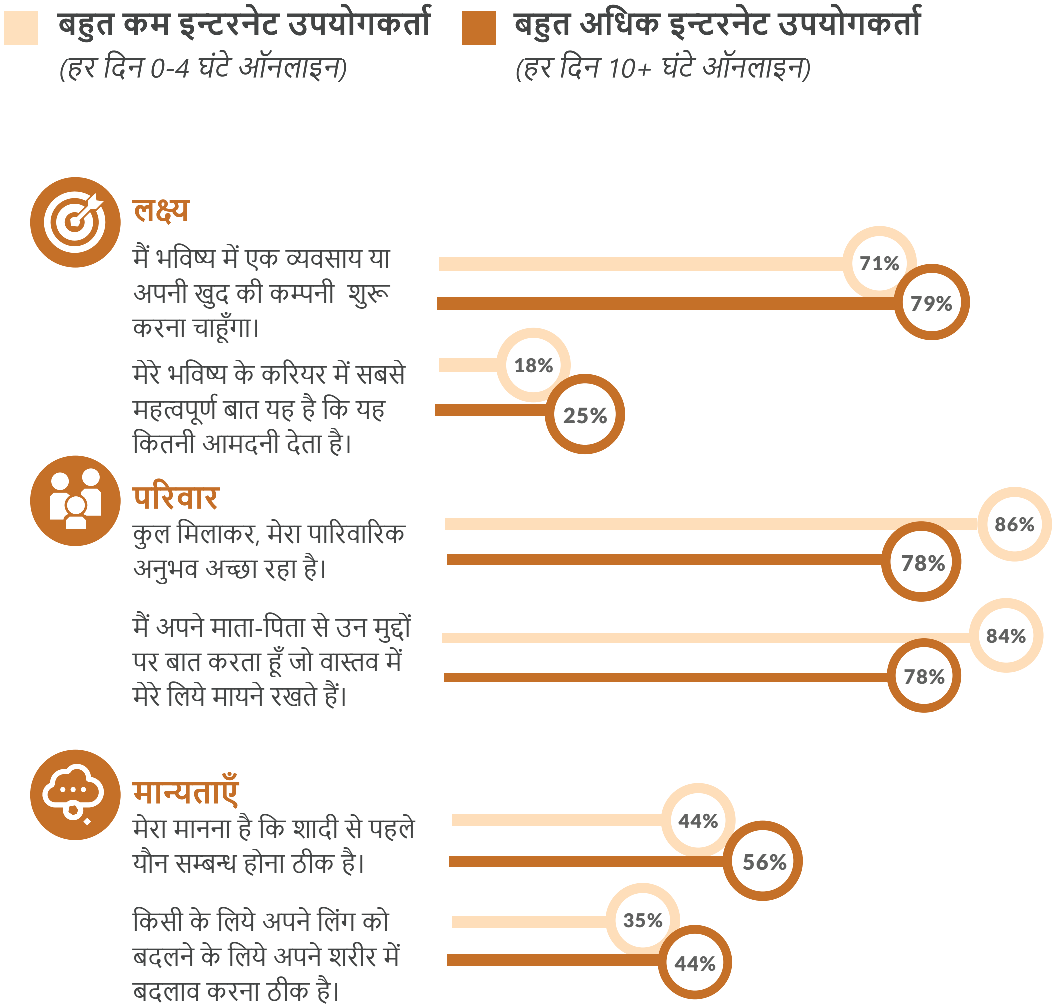

आँकड़ों से यह भी पता चलता है कि इस जुड़ाव के कारण कुछ खास सांस्कृतिक दृष्टिकोण और विचार भी पनपने लगते हैं। उदाहरण के लिये, जो किशोर बहुत अधिक इन्टरनेट उपयोगकर्ता हैं, वे यह कहते हैं कि शादी से पहले यौन सम्बन्ध होना ठीक है और यह भी कि एक अलग लिंग बनने के लिये अपने शरीर में बदलाव करना स्वीकार करने योग्य है। इस में से कुछ बिलकुल भी आश्चर्यजनक नहीं है, शायद, यह देखते हुए कि जो किशोर ऑनलाइन पर बहुत समय बिता रहे हैं, वे दुनिया के व्यापक दृष्टिकोण और नैतिकता के प्रति आकर्षक हो सकते हैं।

इन्टरनेट का उपयोग और व्यक्तिगत संघर्ष

बहुत कम इन्टरनेट उपयोगकर्ता *(हर दिन 0-4 घंटे ऑनलाइन)*

बहुत अधिक इन्टरनेट उपयोगकर्ता *(हर दिन 10+ घंटे ऑनलाइन)*

पिछले तीन महीनों के भीतर, मैंने अनुभव किया है:

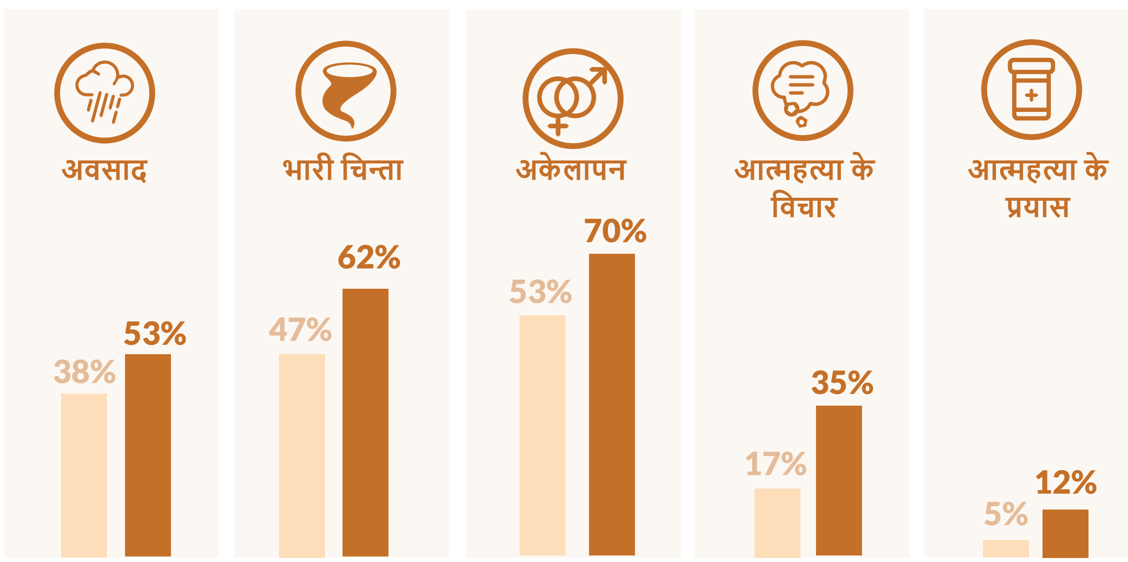

आँकड़ों में सबसे आश्चर्यजनक आपसी सम्बन्ध कुछ हद तक तब स्पष्ट हुए जब किशोरों का इन्टरनेट उपयोग उनके जीवित अनुभवों पर हावी हो जाते हैं। बहुत अधिक इन्टरनेट उपयोगकर्ता अपने मानसिक स्वास्थ्य के साथ अधिक संघर्ष करते दिखाई देते हैं। बहुत कम इन्टरनेट उपयोगकर्ताओं की तुलना में 10 या अधिक घंटे ऑनलाइन खर्च करने वाले किशोरों में चिन्ता और अवसाद की उच्च दर रिपोर्ट की गई हैं। उनमें अपने बारे में इस बात की रिपोर्ट करने की दोगुने से अधिक सम्भावना हैं कि उनको आत्महत्या के विचार आए थे और यहाँ तक कि पिछले तीन महीनों के अन्दर उन्होंने आत्महत्या के प्रयास भी किए थे।

स्पष्ट है, ये परिणाम काफ़ी चिन्ताजनक है। हालाँकि, ऑनलाइन समय और किशोर के व्यक्तिगत संघर्ष के बीच के सम्बन्धों की प्रकृति साफ़ नहीं है। यह आँकड़ा दर्शाता है कि उनके बीच किसी तरह का सम्बन्ध है, लेकिन यह सुझाव नहीं देता है कि इसमें एक दूसरे की ओर ले जाता है। यह सम्भव है कि बहुत अधिक इन्टरनेट का उपयोग युवा लोगों के जीवन में निराशा की भावनाओं को भर देता है। दूसरी ओर, किशोर जो पहले से ही अपने मानसिक स्वास्थ्य से जूझ रहे होते हैं, वे इनसे छुटकारा पाने के प्रयास के रूप में अपने डिजिटल उपकरणों की ओर मुड़ते हैं। दोनों ही कुछ हद तक सही हो सकते हैं।

निष्कर्ष

हम यह नहीं भूल सकते कि किशोरावस्था हार्मोनल परिवर्तन, सामाजिक निराशाओं और अन्य रूकावटों से भरा हो सकता है ये सभी एक खराब मानसिक स्वास्थ्य दृष्टिकोण में योगदान कर सकते हैं। आज के किशोरों के जीवन और व्यक्तिगत अनुभवों को प्रभावित करने वाले कारकों के एक जटिल जुड़ाव में डिजिटल उपकरणों पर बिताया गया समय केवल एक और तत्व है। इस सबका क्या मतलब है कि हम इस डिजिटल रूप से जुड़े पीढ़ी को कैसे शामिल करते हैं? यहाँ विचार करने के लिये कुछ बिन्दु हैं:

- **किशोरों के बीच वीडियो बहुत लोकप्रिय हैं।**
  वे युवा लोगों तक पहुँचने का एक शक्तिशाली तरीका है। याद रखें, 94% किशोर हर दिन वीडियो के साथ व्यस्त रहते हैं। हम इस आकर्षक माध्यम का उपयोग मसीह के लिये युवा लोगों तक पहुँचने के लिये कैसे कर सकते हैं?

- **सोशल मीडिया मिश्रित प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है।**
  अधिकांश किशोर हर दिन अपने सोशल मीडिया अकाउंट में पहुँचा करते हैं, लेकिन वहाँ बहुत समय नहीं बिताते हैं (64% हर दिन 1 घंटे या उससे कम समय खर्च करते हैं)। इसके अलावा, किशोर इस बात पर बँटे हुए हैं कि क्या सोशल मीडिया उनकी मदद कर रहा है या उन्हें नुकसान पहुँचा रहा है। हम इस पीढ़ी को उनके डिजिटल व्यवहार के प्रभावों से बाहर निकलने में कैसे मदद कर सकते हैं और उन तनावों को ख़त्म कर सकते हैं जो वे अनुभव कर रहे हैं?

- **हो सकता है कि स्क्रीन के उस पार वाले किशोर भी किसी बात से गहरा संघर्ष कर रहे होंगे।**
  जो लोग ऑनलाइन बहुत समय बिताते हैं, मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से संघर्ष करने की उनकी अधिक सम्भावना होती हैं, इसलिये इस बारे में सोचें कि आप उनसे बातचीत में जवाब देने के लिये कैसे तैयार हो सकते हैं।

पहचान और सम्बन्ध

हमें जो पता चला

लगभग आधे किशोर मानते हैं कि **किसी व्यक्ति का लिंग मुख्य रूप से उस लिंग पर आधारित होता है जिसमें व्यक्ति जन्म लेता है।**

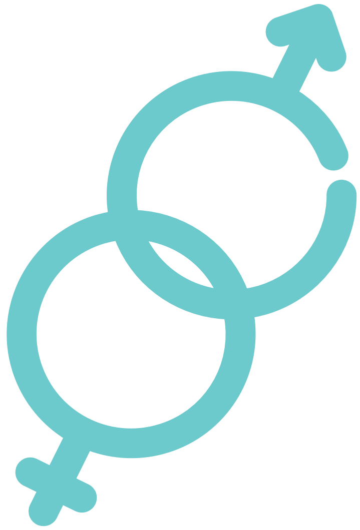

अन्य आधे लोगों का मानना है कि यह कुछ ऐसा है जो **एक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत भावनाओं या यौन आकर्षण** के अनुसार **खुद के लिये निर्धारित करता है।**

लड़कों की तुलना में **लड़कियों** का विवाह के प्रति **पारम्परिक दृष्टिकोण कम** होता है

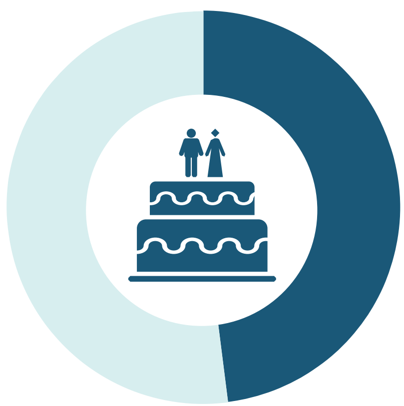

विश्व स्तर पर **48%** किशोर मानते हैं कि विवाह **विशेष रूप से पुरुष और महिला के बीच में ही नहीं होना चाहिए।**

कुल मिलाकर **10 में से 1** किशोर विवाह के लिये **पवित्रशास्त्र आधारित दृष्टिकोण** को सही मानते हैं।

किशोर अपने रिश्तों से सन्तुष्ट हैं, जिसमे **82%** रिपोर्ट करते हैं कि उनके **परिवार का अनुभव उनके साथ कुल मिलाकर अच्छा रहा** है और लगभग इतनी ही संख्या यह कहते हैं कि उनके **करीबी दोस्त हैं जो उन्हें अच्छी तरह से जानते हैं।**

एक विकल्प के रूप में लिंग की पहचान

एक किशोर की पहचान और रिश्ते जटिल और अत्यधिक व्यक्तिगत होते हैं। कोई भी शोध इसमें शामिल सभी पहलुओं को नहीं माप सकती है, इसलिये हमने कई प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिये चुना कि किशोर खुद को और दूसरों को कैसे देखते हैं। वे लिंग पहचान के बारे में क्या कहते हैं और उनके लिये इसका क्या अर्थ है? वे अपने मित्र और पारिवारिक संबंधों से कितने संतुष्ट हैं? यौन सम्बन्ध और शादी जैसे विषयों पर वे वयस्कपन में क्या दृष्टिकोण अपनाते हुए बढ़ रहे हैं? ये बातचीत जटिल हैं, लेकिन यहाँ पर देखें कि हमने इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में क्या पाया है।

वैश्विक स्तर पर लगभग आधे किशोर लिंग के बारे में पारम्परिक दृष्टिकोण रखते हैं, यह कहते हुए कि यह मुख्य रूप से उस व्यक्ति के लिंग पर आधारित है, जिसमें उसका जन्म हुआ है। लेकिन आज के दूसरे आधे किशोरों का मानना है कि लिंग एक विकल्प है - ऐसा कुछ जो व्यक्तिगत भावनाओं या किसी व्यक्ति के यौन आकर्षण के अनुसार स्वयं-निर्धारित किया जा सकता है। किशोरों की एक बड़ी संख्या है जो मानते हैं कि लिंग एक वस्तुनिष्ठ वास्तविकता नहीं है, लेकिन व्यक्तिपरक है।

लैंगिकता मुख्य रूप से आधारित है

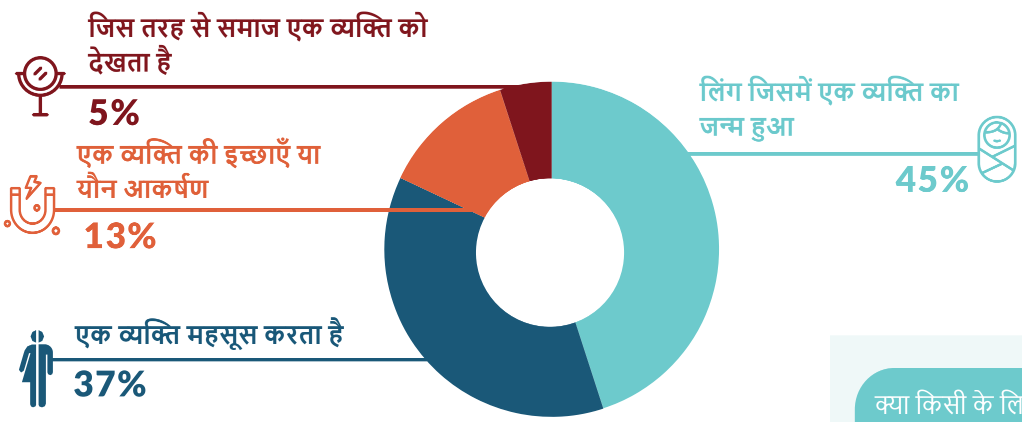

कई किशोर यह भी मानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति महसूस करता है कि वे एक अलग लिंग के हैं, तो उन्हें इसके बारे में कुछ करने में सक्षम होना चाहिए।

विश्व स्तर पर पाँच में से दो किशोर कहते हैं कि किसी के लिये अलग लिंग का होने के लिये अपने शरीर को बदलना स्वीकार करने योग्य है।

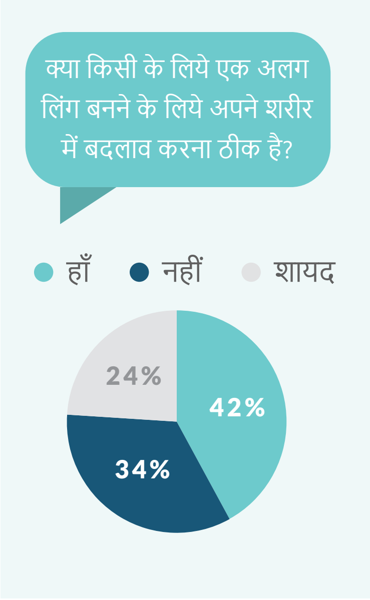

क्षेत्र के आधार पर लैंगिकता का दृष्टिकोण

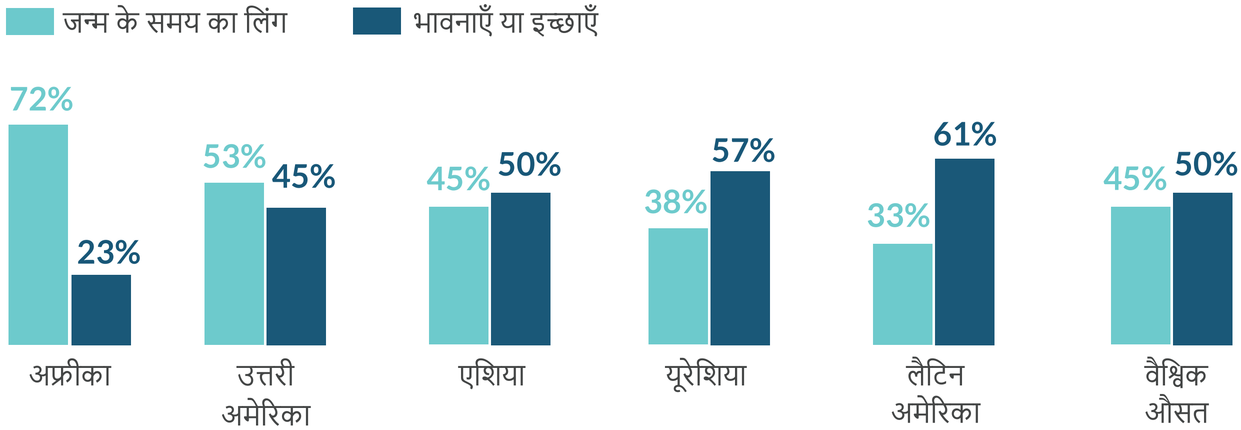

लिंग के बारे में इस पीढ़ी की राय व्यापक रूप से इस आधार पर भिन्न है कि वे दुनिया में कहाँ रहते हैं। उदाहरण के लिये, लैटिन अमेरिका में, उन किशोरों की संख्या जो समझते हैं कि लिंग को स्वयं निर्धारित किया जा सकता है, उन किशोरों से लगभग दुगुनी है जो मानते हैं कि लिंग जन्म के समय निर्धारित हो जाता है। इसके विपरीत, अफ्रीका में अधिकांश किशोर लिंग को विकल्प के रूप में नहीं देखते हैं। अफ्रीकी देशों में लगभग 4 में से 3 किशोर मानते हैं कि किसी व्यक्ति का लिंग मुख्य रूप से जन्म के समय ही निर्धारित हो जाता है।

लैंगिक पहचान और परिवर्तन

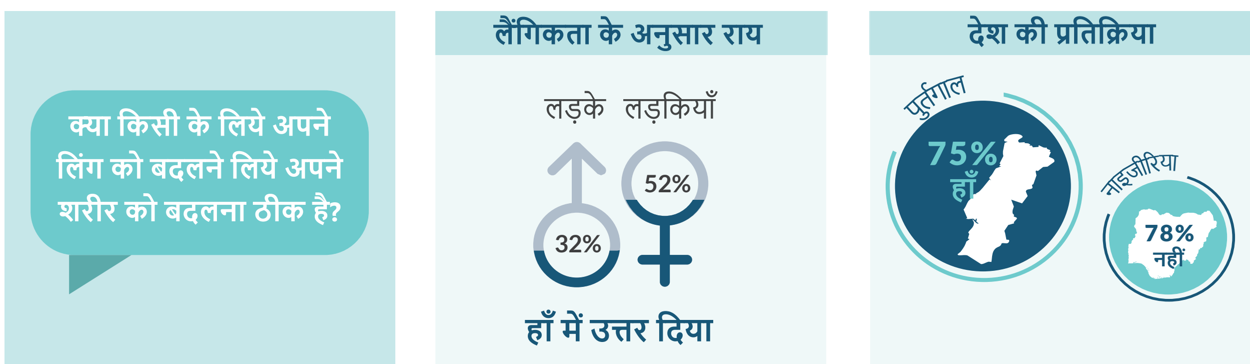

जबकि कई किशोर इस विचार से सहमत हैं कि लिंग के मामले व्यक्तिगत हैं, लेकिन हमारे शोध से पता चला है कि बहुत कम किशोर ही ऐसा कहते हैं कि वे व्यक्तिगत रूप से लैंगिक पहचान के भ्रम का सामना कर रहे हैं या उनके लिंग को बदलने की कोई इच्छा है।

विश्व स्तर पर दस प्रतिशत किशोर कहते हैं कि उन्होंने पिछले 3 महीनों के भीतर लिंग पहचान भ्रम का अनुभव किया है, और 15% का कहना है कि उन्हें लगता है कि वे एक अलग लिंग के रूप में अधिक सन्तुष्ट होते। लड़कियों को लड़कों की तुलना में थोड़ा अधिक सम्भावना है कि वे अपनी लिंग पहचान (12% बनाम 9%) के साथ संघर्ष कर रहे हैं, और रुचिकर बात यह है कि उनके पास सभी विषय पर लड़कों की तुलना में एक अलग दृष्टिकोण है। अधिकांश लड़कियों (59%) का मानना है कि लिंग मुख्य रूप से एक व्यक्ति की भावनाओं या इच्छाओं पर आधारित होता है, जिसकी तुलना में काफी कम लड़कों (42%) का ऐसा मानना और कहना है। लड़कियों का लड़कों की तुलना में यह कहना है कि किसी को अपना लिंग बदलने के लिये अपने शरीर में बदलाव करना उचित है (52% बनाम 32%)।

धर्म का प्रभाव

एक किशोर का धर्म एक अन्य कारक है जिसका लिंग पहचान के बारे में उनकी राय पर एक स्पष्ट प्रभाव होता है। सभी धर्मों में से, मुस्लिम लिंग के पारम्परिक दृष्टिकोण का सबसे दृढ़ता से पालन करते हैं। 62 प्रतिशत मुस्लिम किशोर कहते हैं कि लिंग जन्म के समय निर्धारित होता है, इसके बाद 50% मसीही और अन्य धर्मों के 41% किशोर ऐसा कहते हैं। किशोर जो कहते हैं कि उनके पास कोई धर्म नहीं है वे इस तरह से अपना जीवन बिताते हैं कि हम अपने लिंग को स्वयं निर्धारित कर सकते है। यह उस व्यक्ति की भावनाओं पर या उनके यौन आकर्षण (63%) के आधार पर निर्धारित होता है कि वह कैसा महसूस करता है।

हालाँकि, यह दृष्टिकोण उन समर्पित मसीही किशोरों के बीच बहुत अलग है जो अपने विश्वास के मूल मान्यताओं को पकड़े रहते हैं और यह भी कहते हैं कि उन्हें बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने की आदत है। दस में से सात समर्पित मसीही किशोर लिंग के प्रति पारम्परिक दृष्टिकोण रखते हैं, और केवल 10 में से 1 का मानना है कि लिंग बदलने के लिये आपके शरीर को बदलना उन्हें स्वीकार करने योग्य है।

मसीही किशोरों की प्रतिक्रिया

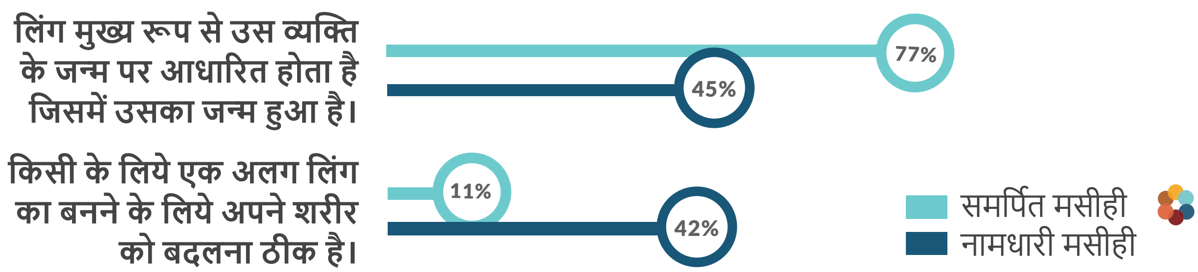

समान लिंग के प्रति आकर्षण

एक महत्वपूर्ण संख्या में युवा इस बात को साझा करते हैं कि समान-लिंग आकर्षण कुछ ऐसा है जो उन्होंने अनुभव किया है। विश्व स्तर पर 5 में से 1 किशोर ने पिछले तीन महीनों के भीतर अपने ही लिंग के किसी व्यक्ति के प्रति यौन आकर्षण महसूस किया है। समर्पित मसीहियों की तुलना में नामधारी मसीहियों ने इसकी अधिक रिपोर्ट की है।

वैश्विक स्तर पर 5 में से 1 किशोर ने समान लिंग के प्रति आकर्षण की रिपोर्ट की है

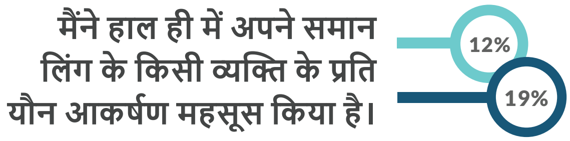

देश के आधार पर समान लिंग के प्रति आकर्षण

प्रमुख देश

1	यूनाइटेड किंगडम	29%
2	अर्जेन्टिना	29%
3	भारत	29%

सबसे न्यूनतम देश

1	वियतनाम	14%
2	जापान	14%
3	इण्डोनेशिया	7%

हमारे अध्ययन में अन्य मापदण्डों के साथ इस विषय की जाँच में, कई रुचिकर जुड़ाव सामने आए। उदाहरण के लिये लड़कियों में लड़कों की तुलना में समान यौन आकर्षण होने की संभावना दोगुना होती है (28% बनाम 13%)। एक युवा व्यक्ति का अनुभव उनके घर में भी एक भूमिका निभाने के लिये होता है। किशोर जो कहते हैं कि उनके परिवार के साथ अच्छा अनुभव नहीं है, वे अपने ही समान लिंग के प्रति अधिक आकर्षण का अनुभव करते हैं, बजाय इसके कि उन्हें एक अच्छा परिवार का अनुभव मिला होता (30% बनाम 18%)।

धर्म एक सीमित करने वाला कारक होता है। किशोर जो किसी धर्म के साथ पहचान रखते हैं, उनकी उन किशोरों की तुलना में समान लिंग के प्रति आकर्षित होने की सम्भावना कम होती हैं जिनके पास कोई धर्म नहीं है (18% बनाम 25%)। मुस्लिमों (13%) और समर्पित मसीहियों (12%) के बीच समान लैंगिक आकर्षण भी बहुत कम होता है।

अन्त में, समान लिंग के प्रति आकर्षण अन्य व्यवहारों के साथ जुड़ा हुआ दिखाई देता है। उन किशोरों में से जो हाल ही में आत्महत्या के प्रयास की रिपोर्ट करते हैं, लगभग आधे (46%) ऐसे थे जो समान लिंग के प्रति आकर्षण की रिपोर्ट करते हैं। नशीली दवा का उपयोग, अवसाद, भारी चिन्ता, या अश्लील साहित्य को देखना आदि सभी ऐसे कारक हैं जिनके द्वारा एक किशोर में समान लिंग के प्रति आकर्षण की सम्भावना लगभग दुगुनी होती है।

समान लिंग के प्रति आकर्षण से सम्बन्धित 4 कारक

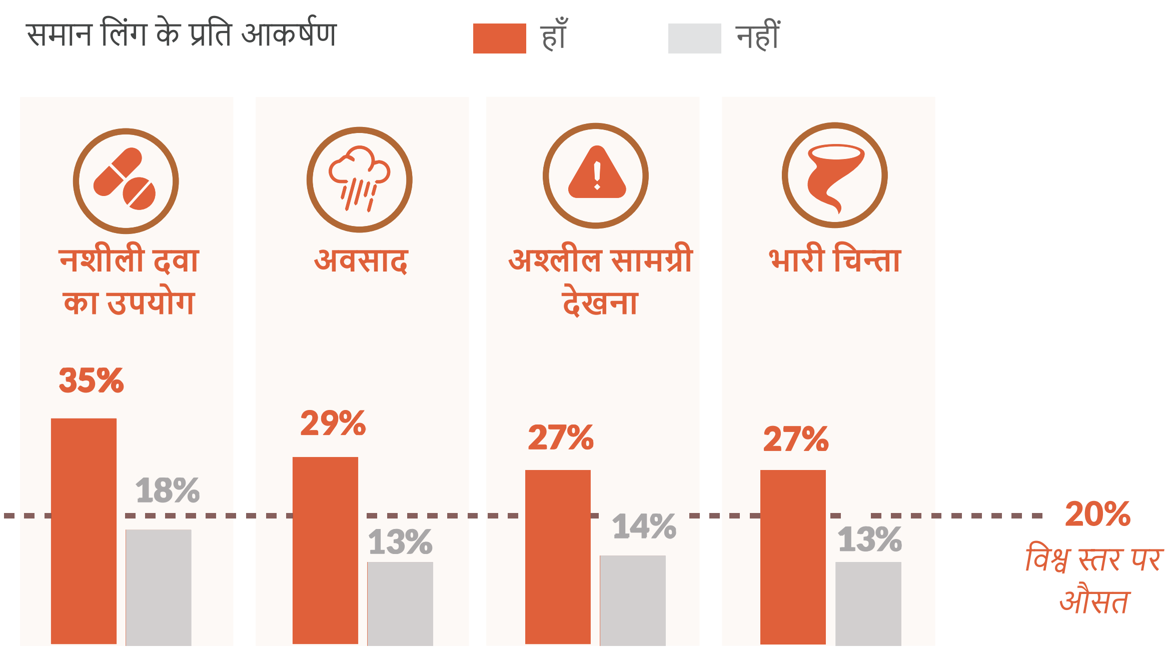

शादी के प्रति दृष्टिकोण

क्या शादी एक जीवनभर की प्रतिबद्धता होनी चाहिए?

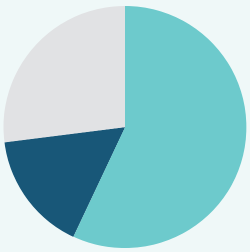

हाँ 57% | नहीं 16% | शायद 27%

क्या विवाह विशेष रूप से एक पुरुष और एक स्त्री के बीच होना चाहिए?

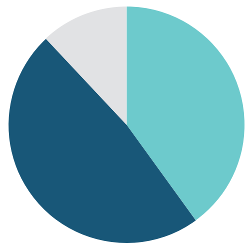

हाँ 40% | नहीं 48% | शायद 12%

लिंग के आधार पर राय

लड़के लड़कियाँ

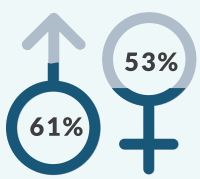

हाँ में उत्तर दिया

लड़के लड़कियाँ

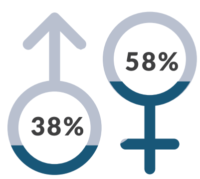

नहीं में उत्तर दिया

देश की प्रतिक्रिया

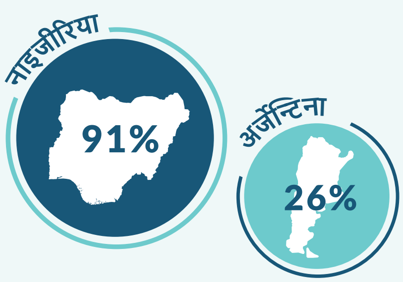

सबसे अधिक / सबसे कम हाँ प्रतिक्रिया

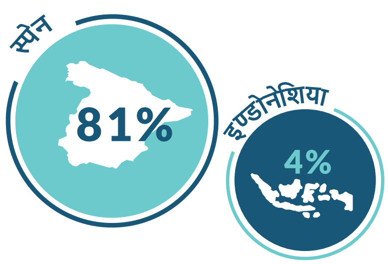

सबसे अधिक / सबसे कम नहीं प्रतिक्रिया

हमने शादी के बारे में किशोरों की मान्यताओं की भी जाँच-पड़ताल की – वे दृष्टिकोण जिन्हें वे वयस्कपन और अपने भविष्य के सम्बन्धों के लिये अपने साथ आगे लेकर जायेंगे।

अधिकांश किशोर (57%) का मानना है कि विवाह एक जीवनभर की प्रतिबद्धता होनी चाहिए, लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रतिशत इस बात से सुनिश्चित नहीं है (27%) या कहते हैं कि वे असहमत हैं (16%)। किशोर इस बात पर भी कम यकीन करते हैं कि शादी विशेष रूप से एक पुरुष और महिला के बीच ही होनी चाहिए। युवाओं का एक मजबूत आधा भाग (48%) ना कहते हैं, जबकि कम (40%) हाँ कहते हैं।

रुचिकर बात यह है कि लड़कों की तुलना में लड़कियों की शादी के प्रति एक अलग दृष्टिकोण है। औसत रूप से, लड़कियों के मानने की सम्भावना कम है कि शादी में जीवनभर की प्रतिबद्धता होनी चाहिए (53% बनाम 61%) और उनके यह कहने की सम्भावना अधिक पाई गई कि शादी केवल एक पुरुष और एक महिला (58% बनाम 38%) के बीच ही नहीं होनी चाहिए।

अलग अलग संस्कृतियों के विचारों को देखते हुए, युवाओं में एक व्यापक भिन्न प्रतिक्रियाएँ पाई जाती हैं। अफ्रीका में किशोरों का मानना है कि शादी में जीवनभर का समर्पण होना चाहिए, जबकि दूसरी ओर लैटिन अमेरिका में किशोर इस बात पर कम यकीन करते हैं।

शादी के बारे में बाइबल का दृष्टिकोण बहुत अल्पसंख्यक है। केवल 7 में से 1 किशोर मानते है कि विवाह एक पुरुष और एक महिला के बीच जीवनभर की प्रतिबद्धता होनी चाहिए, और यौन सम्बन्ध को विवाह के संदर्भ में सुरक्षित रखा जाना चाहिए।

7 में से 1 किशोरों में ही विवाह के विषय में एक बाइबल आधारित दृष्टिकोण है

मसीही किशोरों की प्रतिक्रिया

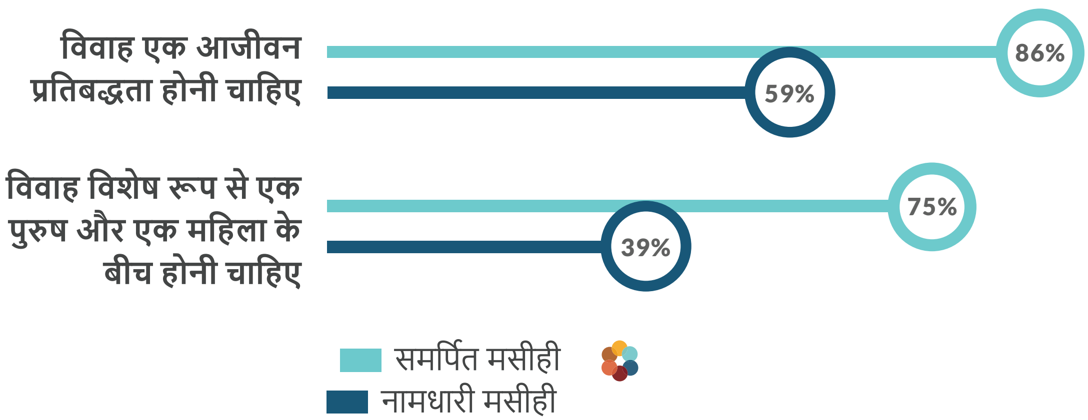

इस विषय पर बाइबल की शिक्षाओं के बावजूद, मसीही विवाह के पूर्व यौन सम्बन्ध स्वीकार करने में मसीही वैश्विक औसत (51%) के समान हैं। मसीही किशोरों का वास्तव में अन्य धर्मों के किशोरों की तुलना में अधिक सम्भावना है कि वे पिछले 3 महीने के भीतर यौन क्रियाओं में (34% बनाम 26%) सक्रिय रहे हैं।

समर्पित मसीही किशोर इन विषयों पर अधिक बाइबल का दृष्टिकोण रखते हैं, हालॉकि वे हाल ही में यौन गतिविधियों की रिपोर्ट करने की सम्भावना रखते हैं।

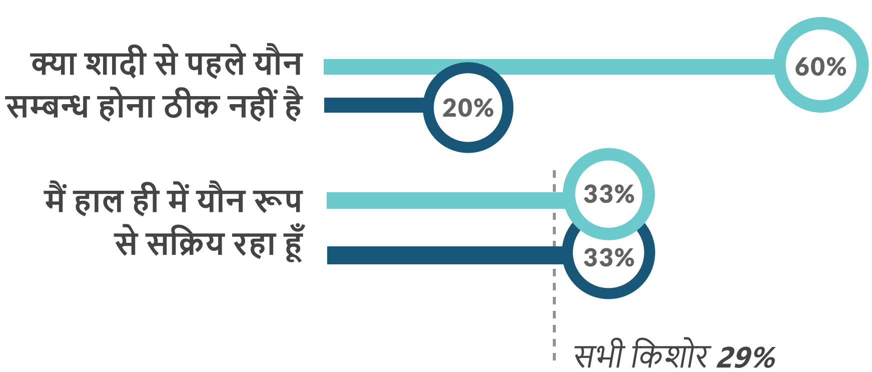

मित्र और पारिवारिक सम्बन्ध

जब उनके वर्तमान समुदाय की बात आती है, तो अधिकांश किशोर कहते हैं कि वे अपने दोस्त और पारिवारिक रिश्तों से सन्तुष्ट हैं। वैश्विक स्तर पर 82% किशोर कहते हैं कि कुल मिलाकर उनका पारिवारिक अनुभव अच्छा रहा है। अध्ययन में प्रतिनिधित्व किए गए परिवारों, संस्कृतियों और परिस्थितियों की व्यापक विविधता को देखते हुए यह एक उल्लेखनीय बहुमत है।

57% किशोरों ने रिपोर्ट की है कि उनका पालन पोषण दो-माता-पिता के घर में हुआ है।

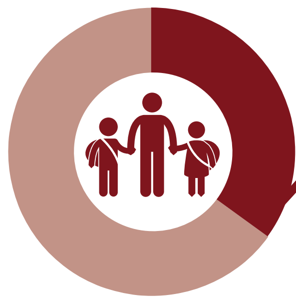

35% कहते है कि वे एक माता-पिता या परिवार के सदस्य के साथ रहते हैं।

हमारे अध्ययन में भारत ही एकमात्र ऐसा देश था जहाँ ये आँकड़े विपरीत थे। भारत में लगभग आधे (47%) किशोर कहते हैं कि वे एक माता-पिता के साथ रहते हैं, और सिर्फ 20% ही दो माता-पिता के साथ रहते हैं। फिर भी, भारतीय किशोर हमारे अध्ययन में शामिल 20 देशों में से किसी भी देश के अपने पारिवारिक अनुभव से सबसे अधिक सन्तुष्ट हैं। प्रभावशाली 93% भारतीय किशोरों ने कहा कि उनका पारिवारिक अनुभव कुल मिलाकर अच्छा ही रहा है।

हमने महत्वपूर्ण विषयों पर अपने माता-पिता के पास बार बार जाने के बारे में पूछकर किशोरों से उनके माता-पिता के साथ निकटता के बारे में कुछ व्यावहारिक जानकारी इकट्ठी की। वैश्विक स्तर पर अधिकांश किशोर कहते हैं कि वे कभी-कभी अपने माता-पिता से उन मुद्दों पर बात करते हैं जो वास्तव में उनके लिए मायने रखते हैं।

विश्व स्तर पर 81% किशोर कहते हैं कि वे कभी-कभी या अक्सर अपने माता-पिता से उन मुद्दों के बारे में बात करते हैं जो वास्तव में उनके लिये मायने रखते हैं।

5 में से 1 किशोर कहते हैं कि उन्होंने शायद ही कभी या कभी ऐसा नहीं करते हैं।

एक बार फिर, भारत 63% किशोरों वाला एकमात्र देश है, जहाँ वे अक्सर अपने माता-पिता से उन मुद्दों के बारे में बात करते हैं जो वास्तव में उनके लिये मायने रखते हैं।

वहीं दूसरे छोर पर, अमेरिकी किशोरों में अक्सर इस तरह की महत्वपूर्ण बातचीत होने की सम्भावना सबसे कम है। संयुक्त राज्य अमेरिका भी परिवार की सन्तुष्टि के मामले में सबसे कम अंक वाला देश है। दस में से तीन अमेरिकी किशोरों ने कहा कि उनके परिवार का अनुभव कुल मिलाकर अच्छा नहीं रहा है।

> विश्व स्तर पर 82% किशोरों का कहना है कि उनके ऐसे करीबी दोस्त हैं जो उन्हें अच्छी तरह से जानते हैं।

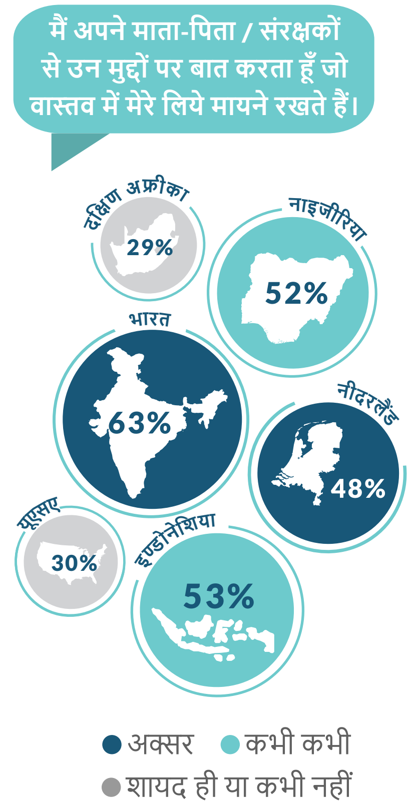

मेरे ऐसे करीबी दोस्त हैं जो मुझे अच्छी तरह से जानते हैं

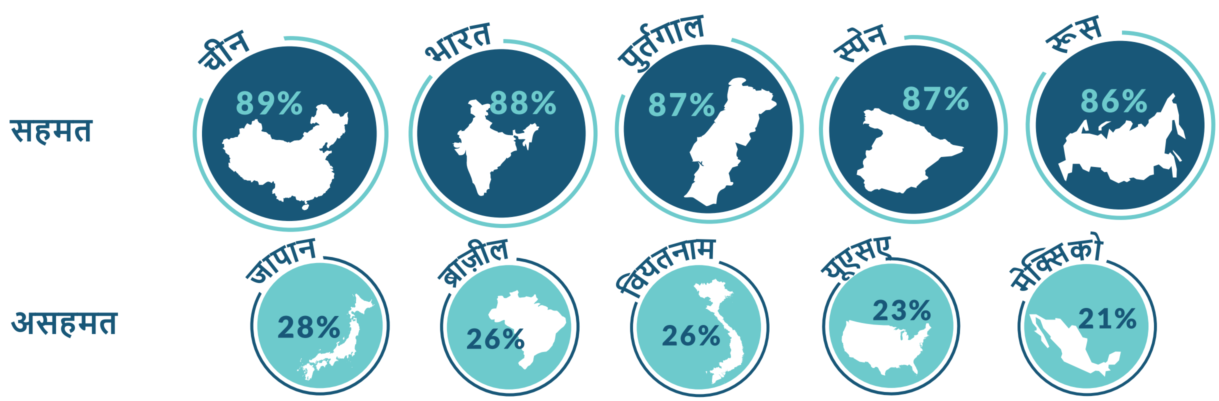

किशोर यह भी संकेत देते हैं कि उनके जीवन में घनिष्ठ मित्र हैं। दुनिया भर में अस्सी प्रतिशत किशोर कहते हैं कि उनके ऐसे करीबी दोस्त हैं जो उन्हें अच्छी तरह से जानते हैं। दुनिया भर में केवल कुछ ही देशों में बहुत ही कम संख्या में किशोर इस बात से असहमत है।

रुचिकर बात यह है, कि एक किशोर की सन्तुष्टि में धर्म और लिंग उसके दोस्तों या परिवार के साथ महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाते हैं। विभिन्न धर्मों के किशोरों के बीच लड़कों और लड़कियों के बीच प्रतिक्रियाएँ काफी समान थी जब उन्होंने करीबी मित्रता, एक सकारात्मक पारिवारिक अनुभव और उनके माता-पिता के साथ खुलकर बातचीत हो रही है या नहीं, इसके बारे में रिपोर्ट की।

निष्कर्ष

पहचान और सम्बन्धों के विषय बहुमुखी हो सकते हैं और उनको सुलझाना थोड़ा मुश्किल हो सकता है। हर व्यक्ति बातचीत के लिये अपनी खुद की पृष्ठभूमि, अनुभव और राय को बताता है। जबकि किसी का ऐसा कोई दृष्टिकोण नहीं है जो इस वैश्विक पीढ़ी की विशेषता बताता हो, इसलिये आँकड़ा उन उभरते हुए प्रवृत्तियों को प्रगट करता है जो हमारी समझ और प्रतिक्रिया को निर्देशित कर सकते हैं।

- **यह पीढ़ी लिंग पहचान की अपनी राय पर आपस में बँटी हुई है।**
  आज के आधे किशोर मानते हैं कि लिंग जन्म के समय निर्धारित हो जाता है, जबकि अन्य आधे किशोरों का कहना है कि लिंग एक ऐसी चीज़ है जो किसी की व्यक्तिगत भावनाओं या यौन इच्छाओं के अनुसार स्वयं-निर्धारित किया जा सकता है। हम इस विषय और इन महत्वपूर्ण जीवन के विकल्पों के बारे में सम्पूर्ण बातचीत के लिये किशोरों को कैसे शामिल कर सकते हैं?

- **किशोरों के विवाह के विषय में अपना खुद का दृष्टिकोण है।**
  यह पीढ़ी स्त्री और पुरुष के बीच जीवनभर की प्रतिबद्धता के रूप में शादी के पारम्परिक दृष्टिकोण से दूर जा रही है। इसके अलावा, अधिकांश किशोर शादी के लिये यौन सम्बन्ध को ज़रूरी नहीं मानते हैं। हम कैसे किशोरों को न केवल शादी के लिये परमेश्वर की योजना को समझने में मदद करते हैं, बल्कि जब इस वाचा की बात आती है तो उन फायदों को बताने में भी मदद करते हैं?

- **लड़कियों के लड़कों से अलग-अलग राय और अनुभव होते हैं।**
  इस शोध से पता चला कि लड़कियों में लड़कों की तुलना में शादी के बारे में कम बाइबल की दृष्टिकोण होती है और उनमें लिंग पहचान के मुद्दों का अनुभव होने की सम्भावना अधिक होती है। आँकड़ों से पता चलता है कि क्या हो रहा है, लेकिन यह सच क्यों नहीं है या इस प्रवृत्ति में और क्या योगदान हो सकता है। हम लड़कियों के साथ इन क्षेत्रों में उनकी राय, अनुभव और संघर्ष को बेहतर ढंग से समझने के लिये कैसे आ सकते हैं?

- **किशोर उनके पारिवारिक रिश्तों से सन्तुष्ट रहते हैं।**
  यह देखना रुचिकर था कि भारतीय किशोर अपने पारिवारिक अनुभव से सबसे अधिक खुश हैं, भले ही वे अधिकतर एकल माता-पिता के घरों में ही रहते हों। यह इस बात को दिखाता है कि युवा लोग आमतौर पर अपने परिवारों से प्रेम करते हैं, यह मायने नहीं रखता की उन्होंने इसे कैसे पूरा किया या इस दौरान कौन-कौन सी कठिनाइयों का सामना किया।

प्रभाव और मार्गदर्शक आवाज

हमें जो पता चला

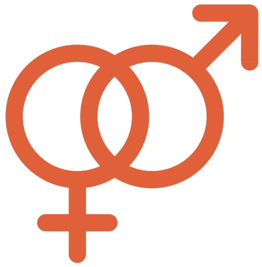

जीवन का अर्थ

किशोर कहते हैं कि जीवन के कुछ महत्वपूर्ण सवालों जैसे कि सही और गलत और जीवन के अर्थ पर मार्गदर्शन के लिये **परिवार** का उन पर सबसे पहला प्रभाव पड़ता है।

लिंग और लैंगिकता

जब लिंग और यौन क्रिया के बारे में बातचीत की बात आती है तो **सोशल मीडिया और दोस्तों** का प्रभाव किशोरों पर सबसे ज्यादा पड़ता है।

किशोर कहते हैं कि एक **धार्मिक विश्वास के बारे में अपने मन को बदलने** के लिये **व्यक्तिगत अनुभव** सबसे पहला कारण होता है।

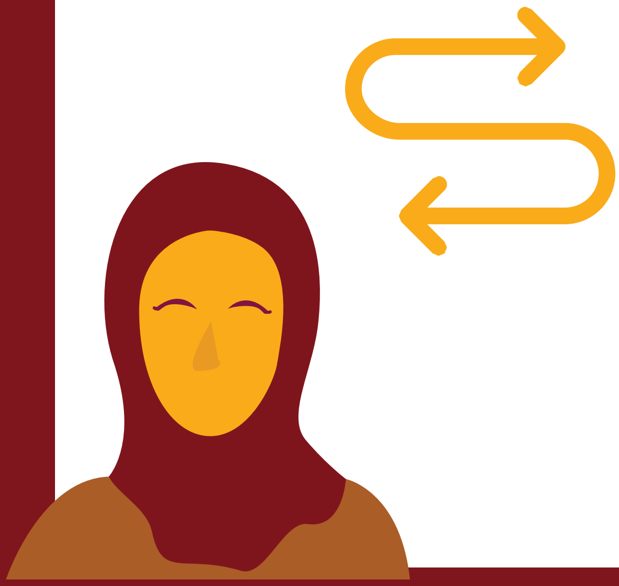

अपेक्षाकृत बहुत ही कम मसीही किशोर कहते हैं कि एक धार्मिक विश्वास के बारे में अपने मन को बदलने के लिये **उनके पास्टर से प्राप्त शिक्षाएँ** प्राथमिक कारण होता है।

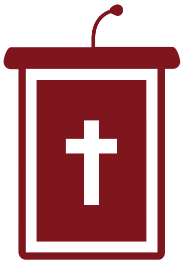

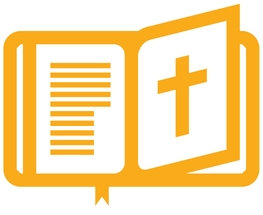

मार्गदर्शन के लिये **अपने पास्टर या बाइबल की ओर मुड़ने** के लिये नामधारी मसीही किशोरों की तुलना में **समर्पित मसीही** किशोरों में चार गुना अधिक सम्भावना होती है।

प्रभाव और मार्गदर्शक आवाज

किशोर बहुत सारी बातों पर राय रखते हैं, लेकिन ये दृष्टिकोण शायद ही कभी एकान्त में बनते हैं। हम इस पीढ़ी के सबसे बड़े प्रभावों के बारे में जानने को उत्सुक थे।

मार्गदर्शन और सलाह के लिये वे किस पर भरोसा करते हैं? जब जीवन के कुछ सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों की बात आती है, तो वे किस आवाज़ को सुनते हैं? एक महत्वपूर्ण विश्वास के बारे में उनके मन को क्या बदल सकता है?

हालॉकि काफी प्रयासों के बाद, इन आँकड़ों ने हमें कुछ जानकारी दी कि कैसे आज के किशोर अपने दृष्टिकोण बनाते हैं।

किशोर अपने परिवार पर भरोसा रखते हैं

किशोर हमें बताते हैं कि वे जीवन के कुछ सबसे महत्वपूर्ण विषयों पर मार्गदर्शन पाने के लिये अक्सर परिवार की ओर मुड़ते हैं। जब जीवन के अर्थ, या सही और गलत क्या होता है, इसके बारे में प्रश्न आते हैं तो परिवार के सदस्यों का उनपर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है।

दोस्त या साथी और सोशल मीडिया - किशोरों के शीर्ष 3 प्रभावकारी तत्व हैं, जहाँ शिक्षक या सलाहकार, धार्मिक अगुवे या लेखों के साथ साथ ऑफ़लाइन मीडिया उनकी सूची में बहुत नीचे दिखाई देते हैं।

निश्चित रूप से कई अन्य क्षेत्र हैं जिनके बारे में हम किशोरों से पूछ सकते हैं। लेकिन आप जीवन के अन्तिम उद्देश्य के बारे में क्या मानते हैं और नैतिकता कहाँ से आती है, इस बात के गहरे प्रभाव होते हैं कि आप कैसे व्यवहार करेंगे।

1. परिवार के सदस्य 41%
2. ऑनलाइन / सोशल मीडिया 20%
3. मित्र / साथी 19%
4. शिक्षक / सलाहकार 7%
5. ऑफ़लाइन मीडिया 7%
6. धार्मिक अगुवे / लेख 7%

सही और गलत
बातचीत

1. परिवार के सदस्य **50%**
2. मित्र / साथी **16%**
3. ऑनलाइन / सोशल मीडिया **14%**
4. शिक्षक / सलाहकार **9%**
5. धार्मिक अगुवे / लेख **7%**
6. ऑफ़लाइन मीडिया **5%**

जब युवा संसार के प्रति अपने दृष्टिकोण को स्थापित करते हैं तो किशोरों के सभी महत्वपूर्ण वर्षों में ये दो बुनियादी प्रश्न सबसे मुख्य होते हैं - मार्गदर्शक विश्वासों का समूह - जो वे अपने साथ अपने वयस्कपन में आगे ले जाएँगे।

जब नैतिकता की बात आती है, तो लैटिन अमेरिका में किशोर दुनिया के किसी भी अन्य क्षेत्र के किशोरों की तुलना में परिवार की ओर अधिक मजबूती से जाते हैं। लैटिन अमेरिका में पाँच में से तीन किशोर कहते हैं कि सही और गलत की जानकारी या मार्गदर्शन पाने के लिये परिवार की ओर जाते हैं।

लेकिन उन देशों में भी जहाँ समझौते की दरें बहुत कम थीं, वहाँ परिवार ही लोगों का सबसे अधिक पसन्द किए जानेवाला उत्तर बना रहा।

देश के अनुसार परिवार का प्रभाव

मैं सही या गलत के बारे में जानकारी या मार्गदर्शन पाने के लिये सबसे अधिक परिवार की ओर जाता हूँ:

सबसे प्रमुख देश **सबसे कम देश**

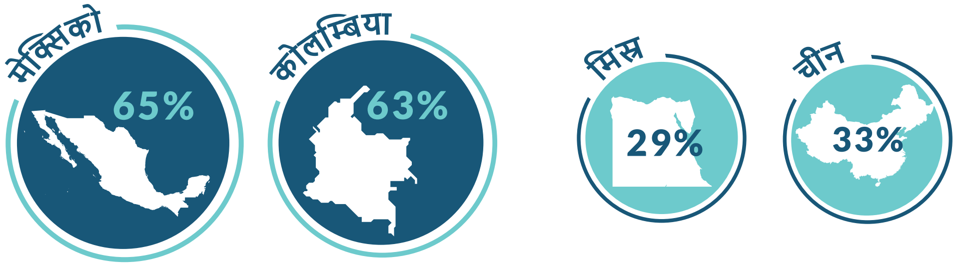

जिन देशों में युवा नकारात्मक पारिवारिक अनुभवों की रिपोर्ट करते हैं, वहाँ भी किशोरों के लिये परिवार एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक आवाज बना हुआ है। उदाहरण के लिये, संयुक्त राज्य अमेरिका किशोरों की पारिवारिक सन्तुष्टि के मामले में सबसे कम अंक वाला देश है। फिर भी, औसत से अधिक अमेरिकी किशोर यह कहते हैं कि वे सही या गलत (52%) या जीवन के अर्थ (42%) के बारे में जानकारी या मार्गदर्शन पाने के लिये सबसे अधिक परिवार की ओर जाते हैं। ऐसा लगता है कि यात्रा के दौरान ठोकरों के बावजूद, माता-पिता और परिवार के सदस्य किशोरों के जीवन में भरोसेमंद प्रभाव डालते हैं।

10 में से 1 मसीही किशोर कहते हैं कि वे जीवन के अर्थ पर मार्गदर्शन के लिये अक्सर अपने पास्टर या अपने बाइबल की ओर जाते हैं।

शायद, बिना आश्चर्य के, किशोरों का प्रभाव उनके धर्म के आधार पर थोड़ा अलग दिखता है। जीवन के अर्थ के बारे में मार्गदर्शन के लिये मसीही अपने परिवार की ओर मुड़ने वाले अन्य किशोरों की तुलना में अधिक सम्भावना रखते हैं, और सोशल मीडिया या दोस्तों/साथियों की ओर कम ही जाते हैं।

धर्म के अनुसार प्रभाव

जहाँ मैं जीवन के अर्थ के बारे में जानकारी या मार्गदर्शन पाने के लिये सबसे ज्यादा जाता हूँ:

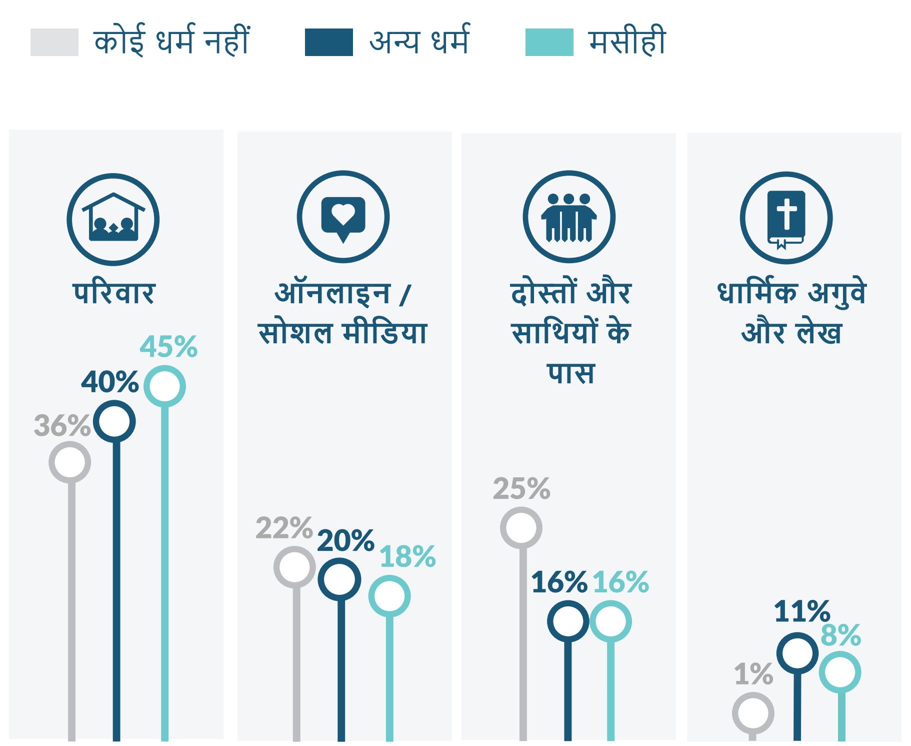

एक अलग बातचीत

एक अन्य क्षेत्र में हमने किशोरों से लिंग, कामुकता और यौन मुद्दों के विषयों को शामिल करने के बारे में पूछा। यह बातचीत अलग-अलग प्रभावों की रिपोर्ट करने वाले किशोरों के साथ बहुत अलग प्रतीत होती है।

इस मामले में, इन्टरनेट यहाँ मार्गदर्शक आवाज है, जिसमें 3 में से 1 किशोर कहते हैं कि वे इन विषयों पर जानकारी या मार्गदर्शन पाने के लिये सोशल मीडिया की ओर जाते हैं। दूसरे सबसे प्रभावशाली स्थान पर दोस्त या साथियों का दावा है, जिसमें परिवार के सदस्य इस घेरे में नीचे आते हैं। जबकि धार्मिक अगुवे या लेख इस सूची में बहुत नीचे आते हैं।

यहाँ तक कि मसीहियों के बीच, परिवार से अधिक ऑनलाइन स्रोत या सोशल मीडिया इन विषयों पर किशोर को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। जब लिंग और यौन क्रिया की बात आती है, तो संस्कृति की आवाज़ पवित्रशास्त्र या कलीसिया जैसी अन्य आवाज़ों को दबाती हुई प्रतीत होती है।

लिंग और यौन सम्बन्धी बातचीत

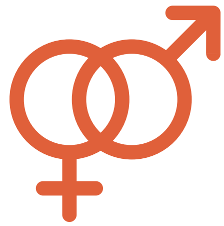

1. ऑनलाइन / सोशल मीडिया **36%**
2. दोस्त / साथियों **23%**
3. परिवार के सदस्य **20%**
4. शिक्षक / सलाहकार **11%**
5. ऑफ़लाइन मीडिया **6%**
6. धार्मिक अगुवे / लेख **4%**

हालॉकि, हम समर्पित मसीहियों के बीच भी महत्वपूर्ण अन्तर को देखते हैं जो मसीही धर्म की मुख्य मान्यताओं को मानते हैं और बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने की आदत रखते हैं। ये किशोर अपने आत्मिक अगुवों और परमेश्वर के वचन पर अधिक ध्यान देते हैं। नामधारी मसीहियों की तुलना में समर्पित मसीही किशोर लगभग चार गुना अधिक ऐसे हैं जो मार्गदर्शन पाने के लिये धार्मिक अगुवों या लेखों की ओर अधिक जाते हैं।

सूचना या मार्गदर्शन पाने के लिये धार्मिक अगुवों या लेखों के ओर जाते हैं

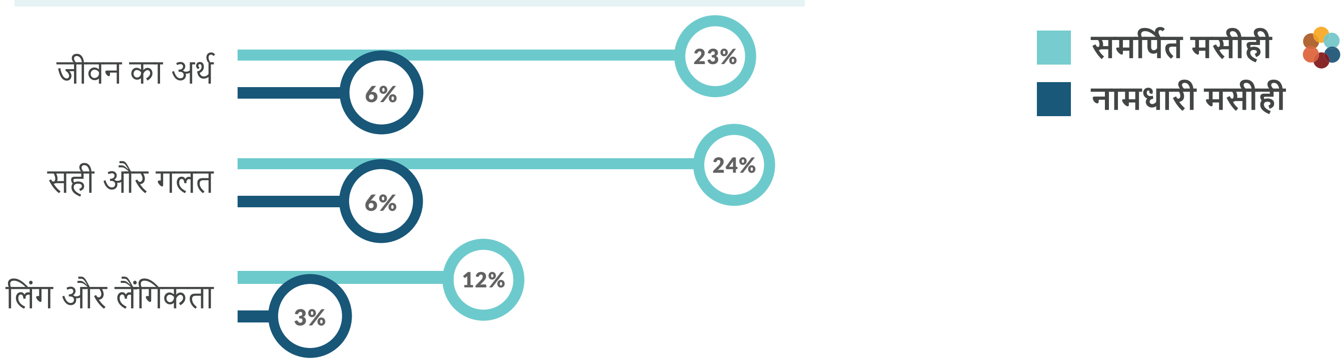

उनके मन को क्या बदलेगा

विचारों को सूचना और आकार देने में प्रभाव तत्व काफी मदद करते हैं, लेकिन आखिर में, प्रत्येक व्यक्ति खुद के लिये निर्णय लेता है कि वे क्या विश्वास करेंगे और कितनी दृढ़ता से वे उस विश्वास में बने रहेंगे।

हम यह पता लगाने के लिये सतह के नीचे गहराई से खोदना चाहते थे कि पहले से ही जिन धार्मिक मान्यताओं को पकड़े हुए हैं, उनसे किशोरों के मन को कैसे बदला जा सकता है।

व्यक्तिगत अनुभव, जैसे कि प्रार्थना का उत्तर, सबसे पसंदीदा उत्तर विकल्प था। किशोर दूसरों की सलाह लेने से ज्यादा खुद इन मुद्दों की जाँच करने के पक्ष में थे। माता-पिता या पास्टर जैसे अधिकार में नियुक्त लोगों के साथ बातचीत करना उनकी सूची में बहुत नीचे थी और दोस्तों के साथ इस बारे में बात करना सबसे आखिर में था।

एक धार्मिक विश्वास के बारे में आपके मन को कौन सी बात बदल सकती है?

1. व्यक्तिगत अनुभव जैसे कि प्रार्थना का उत्तर: **37%**
2. ऑनलाइन या पुस्तकों में मेरी स्वयं की जाँच-पड़ताल: **26%**
3. मेरे माता-पिता के साथ बातचीत: **18%**
4. धार्मिक अगुवों से शिक्षा: **12%**
5. दोस्तों के साथ बातचीत: **8%**

भारत एकमात्र ऐसा देश था, जहाँ इस सवाल के जवाब नाटकीय ढंग से उलटे थे। भारतीय किशोरों में से लगभग आधे (46%) ने कहा कि उनके माता-पिता के साथ बातचीत से उनके मन को बदलने की सबसे अधिक सम्भावना होगी और उन्होंने व्यक्तिगत अनुभवों को बहुत कम (15%) का स्थान दिया।

बिना किसी धर्म के किशोर अपनी स्वयं की जाँच-पड़ताल पर बहुत भरोसा करते हैं, लेकिन फिर भी, कहते हैं कि वे व्यक्तिगत अनुभव से अधिक प्रेरित होंगे। अन्य धर्मों के किशोरों की तुलना में मसीही किशोर यह कहते हैं कि व्यक्तिगत अनुभव उनके मन को बदल देंगे। सभी धर्मों में से, मुस्लिम व्यक्तिगत अनुभवों पर सबसे कम जोर देते हैं और सबसे ज्यादा वे अपने धार्मिक अगुवों की शिक्षाओं पर ध्यान देते हैं। (ध्यान दें कि मुस्लिम नीचे दिए गये "अन्य धर्मों" की श्रेणी में शामिल सबसे बड़ा समूह हैं)।

एक धार्मिक मान्यता के बारे में अपने मन को बदलने की सम्भावना है

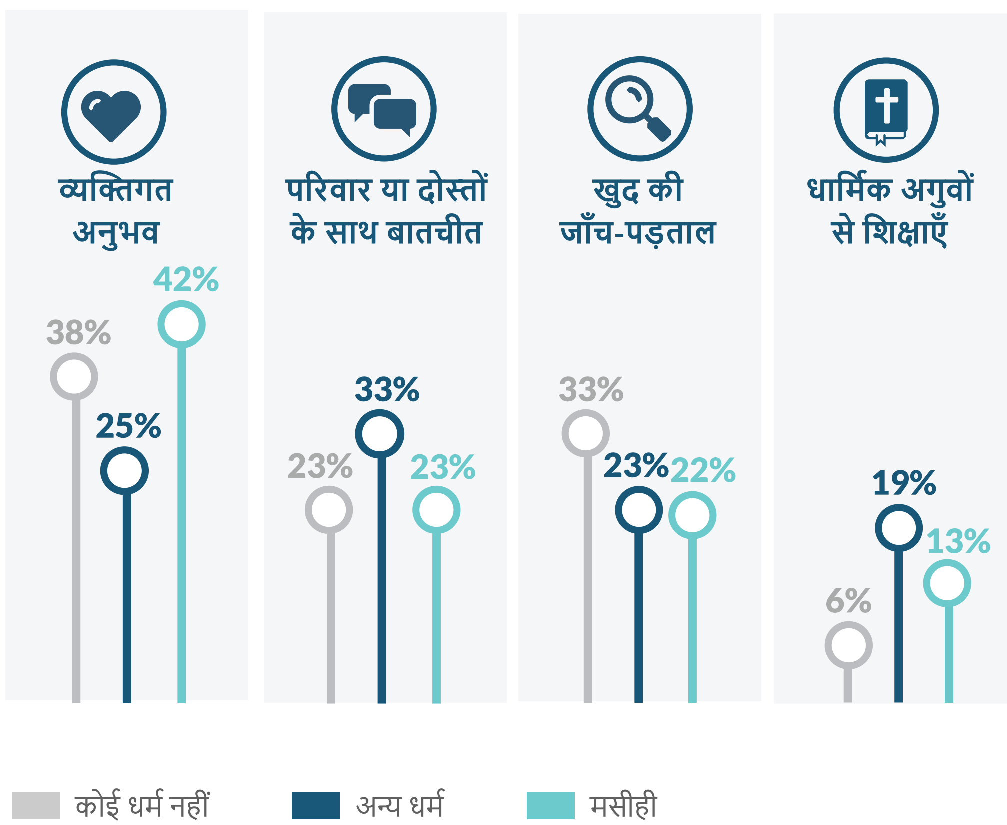

निष्कर्ष

किशोरों से सीधे यह सुनना काफी मददगार साबित हुआ कि वे जिस जटिल और दुविधा से भरी दुनिया में रह रहे हैं, उसमें वे किन प्रभावों और आवाज़ों को सुन रहे हैं। उनकी प्रतिक्रियाओं के बारे में विचार करने के लिये यहाँ कुछ बातें दी गई हैं:

- **पारिवारिक प्रभाव काफी महत्वपूर्ण है।**
  यह शोध दिखाता है कि जब जीवन के कुछ सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों की बात आती है - तो किशोर अन्ततः अपने परिवार पर भरोसा करते और मार्गदर्शन के लिये उनकी ओर मुड़ते हैं। माता-पिता यह निर्धारित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कि उनका बच्चा क्या विश्वास करता है।

- **अन्य स्रोत्रों की तुलना में पवित्रशास्त्र और कलीसिया का प्रभाव कम है।**
  जब लिंग और यौन क्रियाओं के बारे में बातचीत होती है तो यह विशेष रूप से सच होता है । संस्कृति की आवाज़ सोशल मीडिया और साथियों के माध्यम से व्यक्त की जाती है और यह इन महत्वपूर्ण विषयों पर किशोरों के लिये स्तर को स्थापित करते है। इन महत्वपूर्ण मामलों में किशोरों को शामिल करने में कलीसिया अपनी भूमिका कैसे निभा सकती है?

- **व्यक्तिगत अनुभव युवा लोगों के जीवन में काफी प्रभावशाली होते हैं।**
  जो किशोर पहले से ही मसीह के साथ चलते हैं, वे अपने विश्वास के प्रामाणिक अनुभवों के लिये तत्पर रहते हैं, और यहाँ तक कि वे भी जो कहते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व नहीं है, यदि वे व्यक्तिगत रूप से उससे मुलाकात करते हैं तो उनके मन को बदलने के लिये वे तैयार होते हैं। हम उन अनुभवों के होने के लिये माहौल और अवसर उत्पन्न करने में कैसे मदद कर सकते हैं?

रॉब हॉस्किन की ओर से पत्र

क्या हम सुन रहे हैं?

इस शोध के अनुसार, हम अब स्पष्ट रूप से जानते हैं कि आज के युवा को कौन और क्या प्रभावित कर रहे हैं। सत्य से वंचित संस्कृति के बीच एक ईश्वरीय पीढ़ी को बढ़ाने का काम असम्भव सा लगता है, लेकिन हमारा परमेश्वर असम्भव का परमेश्वर नहीं है; वह सब बातों का उपाय करनेवाला परमेश्वर है।

जबकि हम अपने आरम्भिक वर्षों में उन बातों का अनुभव नहीं कर पाए हैं जो हमारे युवा आज सामना कर रहे हैं, शोध - इस रिपोर्ट की तरह – बातों को उजागर करते हैं। इससे, हम इस सच्चाई को समझ सकते हैं कि हमारे युवा रोज़ाना किन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

ये पन्ने स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि किशोर उन विषयों पर ज्ञानवर्धक सलाह पाना चाहते हैं जैसे कि लिंग और यौन क्रिया जिसे संस्कृति ने दबाकर रखा है। हमारे युवाओं के बीच व्यक्तिगत संघर्षों और आत्महत्या के विचारों / प्रयासों की आश्चर्यजनक रूप से बढ़ती संख्या हमें उनकी मदद के लिये पुकार रही है। संकट के इस समुद्र में, अपनी हिम्मत न हारें क्योंकि एक अच्छी खबर है! किशोर सबसे पहले परिवारों की ओर देखते हैं – शारीरिक या आत्मिक - जब उनके अपने जीवन के बारे में बड़े प्रश्न होते हैं।

दुर्भाग्य से, ऐसा लगता है कि परमेश्वर के वचन, पास्टर, और कलीसिया में पाए जाने वाले वास्तविक सत्य के स्रोतों की ओर मुड़ने की बजाय, हमारे किशोर गूगल और यू-ट्यूब में इस बात की खोज कर रहे हैं कि वे कौन हैं और उनके उद्देश्य क्या हैं। उनकी उलझन नई नहीं है। यहाँ तक कि, मुझे लगता है कि आज के किशोर यूहन्ना 14: 5-6 में वर्णित संदेह करने वाले थोमा की तरह हैं, जब वह एक बड़ा जीवन प्रश्न पूछता है, "हम कैसे मार्ग को जान सकते हैं?"

जब हमारे किशोर एक ऐसी दुनिया में दाखिल होने का प्रयास करते हैं, जहाँ कि संस्कृति व्यापक और प्रेरित करने वाली है, तो यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन्हें अनन्त सच्चाई बताकर उन्हें मार्गदर्शन देने में मदद करें। हमें उन्हें यीशु की ओर मोड़ना चाहिए, जो संदेह, भ्रम और सवालों का जवाब ऐसे शब्दों के साथ देता है जो आज भी उतने ही वास्तविक हैं जैसे वे थोमा के समय में सच थे। अगली पीढ़ी को यह जानना होगा कि उनके जवाब किसी बादल में नहीं छिपे हैं, फर्क नहीं पड़ता चाहे संसार कितनी भी जटिल, भ्रामक और समस्या से भरी हुई हो, वे हमेशा सच्चाई का पता लगा सकते हैं और उसकी इस प्रतिक्रिया के साथ अपने लिये समाधान प्राप्त कर सकते हैं:

"मैं ही मार्ग हूँ।"

कार्यविधि

अध्ययन में 20 देशों में 13-19 वर्ष की आयु के 8,394 किशोरों का सर्वेक्षण किया गया। प्रत्येक देश में, लगभग 400 किशोरों के एक प्रतिनिधि नमूने ने सांख्यिकीय आँकड़े प्रदान किए जो 95% विश्वास किया जा सकता है कि यह प्रतिशत परिणाम 13 से 19 वर्ष की आयु के किशोरों के लिये वास्तविक जनसंख्या प्रतिशत के 5% के भीतर थे, और इसी आधार पर अन्य सांख्यिकीय परीक्षण किए गये। बहु-देशीय क्षेत्रों और विश्व स्तर पर, आत्मविश्वास का स्तर अधिक और त्रुटि होने की सम्भावना भी कम थी।

पांच देशों (चीन, मिस्र, भारत, जापान और वियतनाम) में, आरक्षण का इस्तेमाल यह सुनिश्चित करने के लिये किया जाता था कि कम से कम 10% प्रतिक्रिया करने वाले मसीही हो ताकि धार्मिक-आधारित विश्लेषण और तुलना के लिये सार्थक नमूना प्राप्त हो। कई अन्य देशों में, आरक्षण का इस्तेमाल किए बिना ही मसीही या मुस्लिमों के लिये न्यूनतम 10% लक्ष्य नमूना प्राप्त किया गया या अनुमान लगाया गया। केन्या में भी नमूनों में आरक्षण का इस्तेमाल किया गया ताकि इस बात को सुनिश्चित किया जा सके कि प्रतिक्रिया करने वालों में कम से कम 40% लड़कियाँ हो।

उपकरण को "सेन्टीमेन्ट रिसर्च" के माध्यम से वितरित किया गया था। गुणवत्ता को नियन्त्रित करने के लिये, प्रतियोगियों को अयोग्य घोषित किया जाता था यदि वे साधारण जाँच प्रश्न का उत्तर गलत तरीके से देते थे। शोध उपकरण में 70 बुनियादी प्रश्न शामिल थे, जिसमें रुचि के विशेष विषयों का पता लगाने के लिये प्रत्येक क्षेत्र के लिये कई अतिरिक्त प्रश्न जोड़ दिए गये थे।

आँकड़ों को इकट्ठा करना

इस अध्ययन के लिये आँकड़े 24 फरवरी 2020 से 27 मार्च, 2020 तक इकट्ठे किए गये थे। हमारा मानना है कि यह शोध किशोरों के विश्वासों और व्यवहारों को सही ढंग से दर्शाता है इससे पहले कि वे अपने अपने घरों में बन्द और चिकित्सकीय देखरेख के आदेशों से व्यापक प्रभाव महसूस करना शुरू कर दें, जो कि कुल समय सहित आँकड़े बिन्दुओं को प्रभावित कर सकते थे जिसमें कुल ऑनलाइन में बिताए गए समय और मानसिक स्वास्थ्य अनुपात के साथ साथ अवसाद, चिंता, और अन्य बातों का इस अध्ययन के एक भाग के रूप में जाँच की गई। चीन को छोड़कर, हर देश में से, कोविड-19 महामारी के कारण राष्ट्रीय तालाबंदी लागू होने से पहले ही आँकड़ों को इकट्ठा कर लिया गया था। चीन में ऐसा नहीं किया जा सका क्योंकि महामारी का केन्द्र होने के कारण वहाँ बहुत पहले से ही तालाबंदी की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी।

देश	सैम्पल (नमूनों) का आकार	आँकड़ों को इकट्ठा करने की तारीख
अर्जेन्टिना	420 किशोर	27 फरवरी - 2 मार्च, 2020
ब्राजील	420 किशोर	27 फरवरी - 11 मार्च, 2020
चीन	420 किशोर	27 फरवरी - 6 मार्च, 2020
कोलंबिया	413 किशोर	27 फरवरी - 2 मार्च, 2020
मिस्र	420 किशोर	27 फरवरी - 9 मार्च, 2020
भारत	412 किशोर	28 फरवरी - 17 मार्च, 2020
इण्डोनेशिया	420 किशोर	27 फरवरी - 7 मार्च, 2020
जापान	425 किशोर	27 फरवरी - 23 मार्च, 2020
केन्या	435 किशोर	25 फरवरी - 27 मार्च, 2020
मेक्सिको	420 किशोर	27 फरवरी - 2 मार्च, 2020
नीदरलैंड	419 किशोर	27 फरवरी - 8 मार्च, 2020
नाइजीरिया	420 किशोर	24 फरवरी - 20 मार्च, 2020
पुर्तगाल	419 किशोर	7 मार्च - 18 मार्च, 2020
रोमानिया	420 किशोर	28 फरवरी - 13 मार्च, 2020
रूस	418 किशोर	27 फरवरी - 2 मार्च, 2020
दक्षिण अफ्रीका	420 किशोर	24 फरवरी - 7 मार्च, 2020
स्पेन	420 किशोर	7 मार्च - 13 मार्च, 2020
यूनाइटेड किंगडम	420 किशोर	24 फरवरी - 3 मार्च, 2020
यूनाइटेड स्टेट्स	410 किशोर	24 फरवरी - 29 फरवरी, 2020
वियतनाम	423 किशोर	13 मार्च - 26 मार्च, 2020

परिभाषाएँ

समर्पित मसीही

किशोर जो मसीही के रूप में अपने आप को पहचानते हैं, लेकिन "यहोवा साक्षी" या "मार्मोन" के रूप में नहीं और जो निम्नलिखित बातों को पूरा करते हैं:

- विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है और वे उनके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध रख सकते हैं।
- विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।
- विश्वास करते हैं कि पापों की क्षमा यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा ही संभव है।
- विश्वास करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है।
- हर दिन या कम से कम हफ्ते में अपने आप से पवित्र शास्त्र पढ़ते हैं।
- हर दिन या कम से कम हफ्ते में प्रार्थना करते हैं।

ध्यान दें कि समर्पित मसीही कैथोलिक, सेवेन्थ डे एडवेन्टिस्ट, ऑर्थोडॉक्स या कई अन्य मसीही सम्प्रदाय के हो सकते हैं।

नामधारी मसीही

किशोर जो अपने आप को मसीही के रूप में पहचानते हैं, लेकिन "यहोवा साक्षी" या "मार्मोन" और उन समर्पित मसीहियों के रूप में नहीं जो स्थापित केन्द्रीय विश्वासों या आदतों के मापदण्डों को पूरा नहीं करते हैं।

अन्य धर्म

किशोर जो अपने आप को बौद्ध, हिन्दू, यहूदी, मुस्लिम या अन्य धर्म के रूप में पहचानते हैं।

कोई धर्म नहीं

किशोर जो स्वयं को नास्तिक, अनीश्वरवादी या उपरोक्त में से किसी में नहीं पाए जाने के रूप में पहचानते हैं।

इस शोध के बारे में प्रश्न?

research@hopeeducation.org पर सम्पर्क करें

युवा सर्वे

1. आपकी उम्र क्या है?
    1. 13
    2. 14
    3. 15
    4. 16
    5. 17
    6. 18
    7. 19

2. आपका लिंग (सेक्स) क्या है?
    1. महिला
    2. पुरुष

3. आप अभी किस धर्म को मानते हैं, यदि कोई हो?
    1. बुद्ध धर्म
    2. ईसाई धर्म
    3. हिन्दू धर्म
    4. यहूदी धर्म
    5. इस्लाम
    6. कोई अन्य धर्म
    7. मैं किसी को भी नहीं मानता
    8. मैं नास्तिक हूँ
    9. इनमें से कोई भी नहीं

4. क्या आप कैथोलिक, यहोवा के साक्षी, मॉरमॉन या एडवेंटिस्ट हैं?
    1. नहीं
    2. कैथोलिक
    3. यहोवा साक्षी
    4. मॉरमॉन
    5. सातवें दिन के एडवेंटिस्ट

5. आप किसके साथ रहते हैं?
    1. केवल माता या पिता के साथ (शायद सौतेले माता/पिता हो सकते हैं)
    2. माता-पिता दोनों के साथ (इसमें सौतेले माता/पिता भी शामिल हो सकते हैं)
    3. परिवार के अन्य सदस्यों के साथ
    4. इनमे से कोई भी नहीं

6. क्या आप शादीशुदा हैं?
    1. हाँ
    2. नहीं

7. आप कहाँ रहते हैं?
    1. ग्रामीण इलाका (गाँव में जहां 2,500 से कम लोग रहते हैं)
    2. अर्ध-शहरी इलाका (ऐसा शहर जहाँ कम से कम 2,500 और ज्यादा से ज्यादा 50,000 लोग रहते हैं)
    3. शहरी इलाका (50,000 या अधिक लोग)

8. मुझे लगता है कि मैं काफी अच्छा कर रहा हूं।
   1. कभी भी नहीं
   2. थोड़े समय के लिए
   3. कभी कभी
   4. बहुत ज्यादा समय
   5. ज्यादातर समय
   6. हर समय

9. मेरे जीवन में उन चीजों को पाने के लिए मैं कई तरीके सोच सकता हूं।
   1. कभी भी नहीं
   2. थोड़े समय के लिए
   3. कभी कभी
   4. बहुत ज्यादा समय
   5. ज़्यादातर समय
   6. हर समय

10. मैं अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तरह काम कर रहा हूं।
   1. कभी भी नहीं
   2. थोड़े समय के लिए
   3. कभी कभी
   4. बहुत ज्यादा समय
   5. ज़्यादातर समय
   6. हर समय

11. जब मुझे कोई समस्या होती है, तो मैं इसे हल करने के बहुत सारे तरीके अपना सकता हूं।
   1. कभी भी नहीं
   2. थोड़े समय के लिए
   3. कभी कभी
   4. बहुत ज्यादा समय
   5. ज़्यादातर समय
   6. हर समय

12. मुझे लगता है कि जो बातें मैंने पहले की है, वे आगे भी मेरी मदद करेंगी।
   1. कभी भी नहीं
   2. थोड़े समय के लिए
   3. कभी कभी
   4. बहुत ज्यादा समय
   5. ज़्यादातर समय
   6. हर समय

13. यहां तक कि जब अन्य लोग छोड़ना चाहते हैं, तो मुझे पता है कि मैं समस्या को हल करने के तरीके खोज सकता हूं।
   1. कभी भी नहीं
   2. थोड़े समय के लिए
   3. कभी कभी
   4. बहुत ज्यादा समय
   5. ज़्यादातर समय
   6. हर समय

14. एक दिन में, आप कितने घंटे ऑनलाइन (इन्टरनेट) पर बिताते हैं? (सभी गतिविधियों को जोड़ें)
_______ घंटे

15. एक दिन में, लगभग कितना समय आप ऑनलाइन बातचीत, मैसेज भेजने या वीडियो चैटिंग में बिताते हैं?
    1. मैं आमतौर पर ऐसा नहीं करता/करती हूं।
    2. हर दिन 30 मिनट से कम
    3. हर दिन 30 मिनट से एक घंटे तक
    4. हर दिन एक घंटे से ज़्यादा। कृपया लिखें कि कितने घंटे ______

16. एक दिन में, आप कितना समय ऑनलाइन वीडियो या फिल्में (यू-ट्यूब, नेटफ्लिक्स पर) देखने में बिताते हैं?
    1. मैं ऐसा नहीं करता/करती हूं।
    2. हर दिन 30 मिनट से कम
    3. हर दिन 30 मिनट से एक घंटे तक
    4. हर दिन एक घंटे से ज़्यादा। कृपया लिखें कि कितने घंटे ______

17. एक दिन में, आप कितना समय सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने में बिताते हैं?
    1. मैं ऐसा नहीं करता/करती हूं।
    2. हर दिन 30 मिनट से कम
    3. हर दिन 30 मिनट से एक घंटे तक
    4. हर दिन एक घंटे से ज़्यादा। कृपया लिखें कि कितने घंटे ______

18. एक दिन में, आप गेम खेलने में (प्ले-स्टेशन, एक्स-बॉक्स, कंप्यूटर, स्मार्टफोन पर) कितना समय बिताते हैं?
    1. मैं ऐसा नहीं करता/करती हूं।
    2. हर दिन 30 मिनट से कम
    3. हर दिन 30 मिनट से एक घंटे तक
    4. हर दिन एक घंटे से ज़्यादा। कृपया लिखें कि कितने घंटे ______

19. मैं मुख्य रूप से सोशल मीडिया का इस्तेमाल करता हूं ... (केवल 2 को चुनें)
    1. जानकारी पाने के लिए
    2. उन हस्तियों या ब्रांडों को देखने के लिए जो मुझे पसंद है
    3. मेरे दोस्तों और परिवार के साथ जुड़े रहने के लिए
    4. मज़ेदार या मनोरंजक बातों को ढूँढने के लिए
    5. मेरे बारे में दुनिया को अधिक बताने के लिए

20. सोशल मीडिया मुझे मेरे जीवन से संतुष्ट महसूस कराने में मदद करता है।
    1. बिल्कुल नहीं मानता/मानती
    2. नहीं मानता/मानती
    3. शायद
    4. मानता/मानती हूँ
    5. बिल्कुल मानता/मानती हूँ

21. सोशल मीडिया मुझे दुखी, चिंतित या उदास महसूस कराता है।
    1. अक्सर
    2. कभी कभी
    3. बहुत कम या कभी नहीं

22. कुल मिलाकर, मेरा पारिवारिक अनुभव अच्छा रहा है।
    1. बिल्कुल नहीं मानता/मानती
    2. नहीं मानता/मानती
    3. मानता/मानती हूँ
    4. बिल्कुल मानता/मानती हूँ

23. मेरे करीबी दोस्त हैं जो मुझे अच्छी तरह से जानते हैं।
    1. बिल्कुल नहीं मानता/मानती
    2. नहीं मानता/मानती
    3. मानता/मानती हूँ
    4. बिल्कुल मानता/मानती हूँ

24. मेरी आस्था (विश्वास) या आत्मिक यात्रा मेरी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
    1. बिल्कुल नहीं मानता/मानती
    2. नहीं मानता/मानती
    3. मानता/मानती हूँ
    4. बिल्कुल मानता/मानती हूँ

25. मेरे लिए एक ख़ास व्यक्ति होना और मेरे आसपास के लोगों से अलग होना महत्वपूर्ण है।
    1. बिल्कुल नहीं मानता/मानती
    2. नहीं मानता/मानती
    3. मानता/मानती हूँ
    4. बिल्कुल मानता/मानती हूँ

26. शिक्षा महत्वपूर्ण चीज है जो मेरे बेहतर भविष्य को पक्का करती है।
    1. बिल्कुल नहीं मानता/मानती
    2. नहीं मानता/मानती
    3. शायद
    4. मानता/मानती हूँ
    5. बिल्कुल मानता/मानती हूँ

27. आपको विश्वविद्यालय या यूनिवर्सिटी जाने से क्या रोक सकते हैं? (केवल 2 को चुनों)
    1. बहुत महँगा है
    2. उतना समय नहीं है
    3. मैं कॉलेज की ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पाऊँगा/पाऊँगी
    4. मुझे नहीं पता कि मुझे क्या पढ़ना होगा
    5. मैं व्यक्तिगत रूप से किसी यूनिवर्सिटी में नहीं जा सकता या ऑनलाइन भाग नहीं ले सकता
    6. मेरी एक अन्य योजना है जिसके लिए मुझे यूनिवर्सिटी जाने की ज़रुरत नहीं है
    7. इनमें से कोई नहीं - मैं यूनिवर्सिटी जा रहा हूं

28. मैं भविष्य में खुद का एक व्यवसाय या अपनी खुद की कंपनी शुरू करना चाहूंगा।
    1. हाँ
    2. नहीं

29. मेरे भविष्य के करियर में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है:
    1. यह कितनी कमाई देगी
    2. मैं जो करता हूं वह सम्मानीय है
    3. कि मैं दूसरों की मदद करूंगा
    4. कि मैं जो काम करता हूं, उसका आनंद उठाता हूं
    5. कि मैं उन नौकरियों का पता लगाऊँ जो उपलब्ध हैं
    6. इनमे से कोई नहीं

30. क्या शादी जीवनभर की प्रतिबद्धता होनी चाहिए?
   1. हाँ
   2. नहीं
   3. शायद

31. क्या शादी एक आदमी और एक औरत के बीच में ही होनी चाहिए?
   1. हाँ
   2. नहीं
   3. शायद

32. क्या आप मानते हैं कि शादी से पहले सेक्स करना ठीक है?
   1. हाँ
   2. नहीं
   3. शायद

33. आपको क्या लगता है कि लिंग (gender) मुख्य रूप से किस पर आधारित है?
   1. जिसके साथ एक व्यक्ति का जन्म हुआ
   2. जो एक व्यक्ति महसूस करता है
   3. एक व्यक्ति की इच्छाएं या यौन आकर्षण
   4. वह तरीका जिससे समाज एक व्यक्ति को देखता है
   5. मुझे इस सवाल में कुछ दुविधा है

34. क्या किसी को एक अलग लिंग (gender) बनने के लिए अपने शरीर को बदलना ठीक है?
   1. हाँ
   2. नहीं
   3. शायद
   4. मुझे यह सवाल समझ नहीं आ रहा

35. जीवन के अर्थ के बारे में जानकारी या मार्गदर्शन के लिए आप सबसे अधिक कहां जाते हैं? केवल एक को चुनें।
   1. परिवार के सदस्यों के पास
   2. दोस्तों / साथियों के पास
   3. शिक्षक / सलाहकार के पास
   4. धार्मिक अगुवे या धार्मिक लेखों की ओर
   5. सोशल मीडिया या अन्य ऑनलाइन स्रोत (यू-ट्यूब, वेबसाइट आदि)
   6. किताबें, पत्रिकाएँ, टेलीविजन, रेडियो या अखबार

36. सही या गलत क्या है, इसके बारे में जानकारी या मार्गदर्शन पाने के लिए आप कहां जाते हैं? केवल एक।
   1. परिवार के सदस्यों के पास
   2. दोस्तों / साथियों के पास
   3. शिक्षक / सलाहकार के पास
   4. धार्मिक अगुवे या धार्मिक लेखों की ओर
   5. सोशल मीडिया या अन्य ऑनलाइन स्रोत (यू-ट्यूब, वेबसाइट आदि)
   6. किताबें, पत्रिकाएँ, टेलीविजन, रेडियो या अखबार

37. लिंग (gender), लैंगिकता (sexuality) या अन्य लैंगिक (sexual) बातों के बारे में जानकारी या मार्गदर्शन पाने के लिए आप सबसे ज़्यादा कहाँ जाते हैं? केवल एक को चुनो।
1. परिवार के सदस्यों के पास
2. दोस्तों / साथियों के पास
3. शिक्षक / सलाहकार के पास
4. धार्मिक अगुवे या धार्मिक लेखों की ओर
5. सोशल मीडिया या अन्य ऑनलाइन स्रोत (यू-ट्यूब, वेबसाइट आदि)
6. किताबें, पत्रिकाएँ, टेलीविजन, रेडियो या अखबार

38. मैं अपने माता-पिता / अगुवों से उन विषयों पर बात करता हूं जो मेरे लिए महत्व रखते हैं।
1. अक्सर
2. कभी कभी
3. बहुत कम या कभी नहीं

39. धार्मिक विश्वास को लेकर आपके मन को बदलने की सबसे अधिक संभावना किस बात से है?
1. मेरे माता-पिता के साथ बातचीत से
2. दोस्तों के साथ बातचीत से
3. ऑनलाइन (internet) या किताबों में मेरी अपनी
4. धार्मिक अगुवों से प्राप्त शिक्षा
5. व्यक्तिगत अनुभव जैसे कि प्रार्थना का उत्तर पाना

पिछले तीन महीनों में, क्या आपने अनुभव किया:

40. अकेलापन?
1. हाँ
2. नहीं

41. निराशा?
1. हाँ
2. नहीं

42. भारी तनाव?
1. हाँ
2. नहीं

43. लिंग (gender) पहचान की?
1. हाँ
2. नहीं

पिछले तीन महीनों में, आपको लगा कि:

44. अगर आप अलग लिंग (gender) के होते तो आप ज्यादा खुश रह पाते?
1. हाँ
2. नहीं

45. आप अपने समान लिंग (sex) के किसी अन्य व्यक्ति के प्रति लैंगिक रूप से (sexually) आकर्षित हुए?
1. हाँ
2. नहीं

46. ऑनलाइन (internet) किसी के द्वारा धमकाया गया है?
1. हाँ
2. नहीं

47. आपने किसी को ऑनलाइन चोट पहुंचाई है?
1. हाँ
2. नहीं

48. क्या आपने कभी शराब का नशा किया था?
1. हाँ
2. नहीं

49. क्या आपने ईलाज के अलावा अन्य किसी नशीली दवा का इस्तेमाल किया है?
1. हाँ
2. नहीं

50. अश्लील (गन्दी) तस्वीरों या सामग्रियों को देखा है?
1. हाँ
2. नहीं

51. आत्महत्या के विचार आए?
1. हाँ
2. नहीं

52. आत्महत्या करने की कोशिश की थी?
1. हाँ
2. नहीं

53. लैंगिकता (sexual) में जुड़े रहे?
1. हाँ
2. नहीं

54. आप कितनी बार धार्मिक (धर्म से जुडीं) बातों में भाग लेते हैं?
1. कभी नहीँ
2. साल में कई बार
3. महीने में एक बार
4. हफ्ते में एक बार
5. हर रोज

55. आप खुद से बाइबल, कुरान या अन्य धार्मिक किताबों को कितनी बार पढ़ते हैं?
1. कभी नहीं
2. साल में कई बार
3. महीने में एक बार
4. हफ्ते में एक बार
5. हर रोज

56. आप कितनी बार प्रार्थना करते हैं?
1. कभी नहीँ
2. साल में कई बार
3. महीने में एक बार
4. हफ्ते में एक बार
5. हर रोज

57. आप कितनी बार धार्मिक या आत्मिक चीजों के बारे में उन लोगों से बात करते हैं जो आपके विश्वास को नहीं मानते या साझा नहीं करते?
   1. कभी नहीँ
   2. साल में कई बार
   3. महीने में एक बार
   4. हफ्ते में एक बार
   5. हर रोज

58. निम्नलिखित में से कौन सी बात परमेश्वर के प्रति आपके विचार के सबसे नज़दीक आता है?
   1. मैं अच्छाई और बुराई के रूप में ब्रम्हांड की शक्ति पर विश्वास करता हूँ लेकिन एक व्यक्तिगत परमेश्वर में विश्वास नहीं करता/करती।
   2. परमेश्वर मौजूद है और मैं उनके साथ एक व्यक्तिगत रिश्ता रख सकता हूं।
   3. परमेश्वर एक पुराना विचार है जो अब हानिकारक हो सकता है।
   4. मैं कभी परमेश्वर के बारे में नहीं सोचता/सोचती।

59. कौन सा वाक्य बाइबल के प्रति आपके विचार को सबसे अधिक करीबी से दिखाता है?
   1. बाइबल एक पुरानी किताब है जो समस्याओं को सुलझाने की तुलना में अधिक समस्याएं पैदा करती है।
   2. मैं कभी बाइबल के बारे में नहीं सोचता/सोचती।
   3. बाइबल का एक महत्वपूर्ण पुस्तक के रूप में महत्व है, लेकिन यह परमेश्वर का वचन नहीं है।
   4. बाइबल परमेश्वर का वचन है।

60. यीशु के बारे में आपके विचार को किस कथन में सबसे अधिक करीबी से बताया गया है?
   1. मैं यीशु के बारे में कभी नहीं सोचता/सोचती।
   2. यीशु केवल एक शिक्षक या महात्मा के रूप में अध्ययन किये जाने लायक है।
   3. यीशु एक पुरानी कल्पना है जो नुकसानदायक हो सकता है।
   4. यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

61. सभी धर्म एक जैसे ही वास्तविक सत्य को सिखाते हैं।
   1. नहीं मानता/मानती
   2. मानता/मानती हूँ

62. यह मेरी जिम्मेदारी है कि मैं दूसरे लोगों को अपने विश्वास या धार्मिक विचारों के बारे में बताऊं।
   1. नहीं मानता/मानती
   2. मानता/मानती हूँ

63. ज़्यादातर मसीही जिन्हें मैं जानता हूँ वे दयालु और एक दूसरों की देखभाल करने वाले हैं।
   1. नहीं मानता/मानती
   2. मानता/मानती हूँ
   3. मैं किसी मसीही जन को नहीं जानता/जानती

64. यदि कोई मुझे एक मसीही चर्च सेवा में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है तो मैं उनके साथ जाऊंगा/जाऊंगी।
   1. नहीं मानता/मानती
   2. मानता/मानती हूँ
   3. मुझे यकीन नहीं है
   4. मैं पहले से ही चर्च में जाता हूँ

65. क्या आपके चर्च में किशोरों या युवाओं के लिए विशेष रूप से एक या टीचर हैं?
   1. हाँ
   2. नहीं
   3. मुझे पता नहीं
   4. मैं चर्च में नहीं जाता हूँ

66. मेरे चर्च में एक वयस्क है जो मेरे परिवार का सदस्य नहीं है, लेकिन मुझे आत्मिक रूप से बढ़ने में मदद करते हैं।
   1. हाँ
   2. नहीं
   3. मैं चर्च में नहीं जाता हूँ

67. क्या आप अपने चर्च किसी आत्मिक अगुवे के साथ जीवन के मुद्दों और विषयों के बारे में बात करते हैं?
   1. हाँ
   2. नहीं
   3. मैं चर्च में नहीं जाता हूँ

68. क्या बच्चों की सेवकाई आपके आध्यात्मिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?
   1. हाँ
   2. नहीं
   3. मैंने कभी बच्चों की सेवकाई में भाग नहीं लिया

69. पापों की क्षमा केवल यीशु मसीह में विश्वास करने से संभव है।
   1. बिल्कुल नहीं मानता/मानती
   2. नहीं मानता/मानती
   3. मानता/मानती हूँ
   4. बिल्कुल मानता/मानती हूँ

70. आपने किस उम्र में यीशु मसीह के लिए अपने आप को समर्पित करने का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लिया था? एक संख्या (उम्र) लिखें। यदि आपने यीशु के लिए कोई समर्पण नहीं किया है, तो कृपया 0 लिखें। ________

ग्लोबल यूथ कल्चर, ग्लोबल रिपोर्ट
होप एजुकेशन. द्वारा कॉपीराईट © 2021

पवित्रशास्त्र की आयतें, बीएसआई हिन्दी पवित्र बाइबल (बीएसआई ®) से लिए गए हैं।
अनुमति द्वारा उपयोग किया जाता है। सभी अधिकार सुरक्षित।

ग्लोबल

यूथ कल्चर